

पीएम मोदी को ‘सपेरा’ दिखाकर उड़ाया मज़ाक, सोशल मीडिया पर फूटा भारतीयों का गुस्सा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। खुद को ‘प्रेस फ्रीडम’ (प्रेस की आज़ादी) का सबसे बड़ा चैंपियन बताने वाले देश नाँव के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित अखबार ‘आफ्टेनपोस्टेन’ ने पत्रकारिता की गरिमा और अंतरराष्ट्रीय शिष्टाचार को तार-तार कर दिया है। अखबार ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक बेहद आपत्तिजनक और नस्लभेदी कार्टून प्रकाशित किया है, जिसमें उन्हें एक ‘सपेरे’ के रूप में दिखाया गया है। इस कार्टून की हेडलाइन और प्रस्तुति इतनी घटिया है कि इसे लेकर वैश्विक स्तर पर और खासकर सोशल मीडिया पर भारतीयों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया है।

क्या है उस विवादित कार्टून में ?

नाँव के इस अखबार ने प्रधानमंत्री मोदी को एक पारंपरिक भारतीय सपेरे की वेशभूषा में दिखाया है, जो बीन बजा रहा है। कार्टून के जरिए भारत की सदियों पुरानी रूढ़िवादी छवि (सांप-सपेरा का देश) को दोबारा उभारने की भद्दी कोशिश की गई है। इस कार्टून के साथ लिखी गई हेडलाइन भी भारत की संप्रभुता और देश के शीर्ष नेतृत्व पर सीधा प्रहार करती है। सोशल मीडिया पर नेटिजन्स का साफ कहना है कि पश्चिमी मीडिया भारत के आर्थिक, तकनीकी और भू-राजनीतिक उदय को पचा नहीं पा रहा है, इसलिए वह अब इस तरह की ओछी हरकतों पर उतर आया है।

प्रेस फ्रीडम की आड़ में ‘नस्लवाद’ का खेल?

नाँवें हर साल वैश्विक प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में नंबर वन होने का दावा करता है। वहां का तंत्र चिल्ला-चिल्ला कर कहता है कि उनके यहां मीडिया पर कोई पाबंदी नहीं है। लेकिन ‘महानगर मेट्रो’ आज यह बड़ा सवाल उठाता है कि: या अभिव्यक्ति की आज़ादी का मतलब यह है कि आपके देश में आए एक विदेशी राष्ट्राध्यक्ष, जो आपका आधिकारिक मेहमान है, उसका इस तरह सरेआम अपमान किया जाए? क्या पश्चिमी देशों की मीडिया के लिए ‘नस्लवाद’ और ‘अभिव्यक्ति की आज़ादी’ एक ही सिक्के के दो पहलू बन चुके हैं?

सोशल मीडिया पर ‘बॉयकाट नाँवें’ का ट्रेंड

इस कार्टून के सामने आते ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ‘एक्स’ (ट्विटर), इंस्टाग्राम और फेसबुक पर भारतीयों का आक्रोश फूट पड़ा है। भारतीय मूल के लोगों और वैश्विक विचारकों ने इसे पूरी तरह से ‘नस्लीय पूर्वाग्रह से ग्रसित’ करार दिया है। यूजर्स ने नाँवें सरकार से इस मामले में दखल देने और अखबार से बिना शर्त माफी मंगवाने की मांग की है। लोगों का कहना है कि जो भारत आज दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, चांद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहरा चुका है और डिजिटल क्रांति का नेतृत्व कर रहा है, उसे ‘सपेरा का देश’ दिखाना पश्चिमी मीडिया की मानसिक दिवालियापन को दर्शाता है।

पश्चिमी मीडिया की पुरानी बीमारी

यह पहली बार नहीं है जब किसी पश्चिमी मीडिया घराने ने भारत का इस तरह मज़ाक उड़ाया है। इससे पहले अमेरिकी अखबार ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ ने भी भारत की पांचवीं साक्षात्का मज़ाक उड़ाते हुए एक कार्टून छपा था (जिसमें एक भारतीय को गाय के साथ एलिट स्पेस क्लब के बाहर खड़ा दिखाया गया था), जिसके बाद चौतरफा थू-थू होने पर उन्हें माफी मांगनी पड़ी थी। अब नाँवें के इस अखबार ने वही धिनीना इतिहास दोहराया है। अब देखना यह होगा कि भारत सरकार का विदेश मंत्रालय इस नस्लभेदी कार्टून पर नाँवें के दूतावास को समन जारी कर क्या कड़ा रुख अपनाता है,

राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन और केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से की मुलाकात राजनीतिक हलकों में बड़ी हलचल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली/जयपुर। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता भंवर सिंह पलाड़ा इन दिनों देश की राजधानी दिल्ली के दौरे पर हैं, जहां उनकी राष्ट्रीय स्तर के दिग्गज नेताओं से मुलाकातों का दौर जारी है। इस दौरे के दौरान भंवर सिंह पलाड़ा ने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन से शिष्टाचार मुलाकात की। इस मुलाकात के बाद राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है। पलाड़ा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के साथ संगठन को मजबूत बनाने, आगामी रणनीतियों और कार्यक्रमों की सक्रियता को लेकर विस्तृत चर्चा की। राष्ट्रीय अध्यक्ष से मुलाकात के बाद पलाड़ा ने उनके कुशल नेतृत्व की सराहना की। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से भी की मुलाकात अपने दिल्ली दौरे के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए भाजपा नेता

राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम मनगढ़ा में 150 एकड़ जमीन पर अवैध प्लांटिंग पर प्रशासन की कार्रवाई

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव. कलेक्टर जितेन्द्र यादव के निर्देशानुसार राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम मनगढ़ा में लगभग 150 एकड़ भूमि पर की जा रही अवैध प्लांटिंग के विरुद्ध प्रशासन द्वारा आज सुबह बड़ी कार्रवाई की गई। प्रशासनिक अमले ने मौके पर पहुंचकर बुलडोजर के माध्यम से अवैध रूप से विकसित किए गए मार्ग, प्रवेश द्वार एवं अन्य निर्माण कार्य को हटाया। प्रशासन को सूचना प्राप्त होने पर ग्राम मनगढ़ा में बिना वैधानिक अनुमति एवं नियमानुसार स्वीकृति के बड़े पैमाने पर अवैध प्लांटिंग की जा रही है। इसके बाद राजस्व विभाग की टीम द्वारा स्थल का निरीक्षण कर कार्रवाई की गई। बिना अनुमति कृषि भूमि का अवैध डायवर्सन एवं प्लांटिंग करना नियमों का उल्लंघन है। ऐसे मामलों में संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन ने आम नागरिकों से भी अपील की है कि किसी भी भूमि अथवा प्लांट की खरीदी करने से पहले उसकी वैधानिक स्थिति, अनुमति एवं दस्तावेजों की जांच अवश्य करें, ताकि भविष्य में किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

प्रादेशिक

जांच एजेंसियों का चक्रव्यूह और कॉरपोरेट टेकओवर: बड़ा सवाल, आखिर सिस्टम किसके लिए काम कर रहा है?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत में अब सवाल सिर्फ भ्रष्टाचार या किसी एक संस्थान मलिकयत निगल जाने तक सीमित नहीं रह गया है। अब एक लंबी फेहरिस्त सामने आ रही है, जो देश के लोकतंत्र और व्यापारिक माहौल पर गंभीर सवाल खड़े करती है। आज सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि कानून क्या है, बल्कि सवाल यह है कि ‘देश का सिस्टम आखिर किसके लिए काम कर रहा है? इस सवाल को हवा दी है हाल ही में सामने आए कोस्टल एनरजेन के मामले ने, जिसने जांच एजेंसियों की कार्यप्रणाली और बड़े कॉरपोरेट घरानों के हितों के बीच के अंतर्संबंधों को एक बार फिर बहस के केंद्र में ला दिया है।

क्या है पूरा मामला ?

कोस्टल एनरजेन के प्रमोटर अहमद ए.आर. बुहारी को प्रवर्तन निदेशालय ने मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में गिरफ्तार किया था। बुहारी को लगभग 32 महीने (करीब पौने तीन साल) जेल की सलाखों के पीछे गुज़ारने पड़े। जब एक प्रमोटर जेल में बंद था, तब उसकी कंपनी दिवाला प्रक्रिया चली गई। क्रोनोलॉजी यहीं खत्म नहीं होती। कंपनी के दिवालिया होते ही ‘अडानी पावर’ से जुड़े एक कंसोर्टियम ने इस संकटग्रस्त कंपनी के अधिग्रहण की प्रक्रिया में प्रवेश किया और उसे अपने नियंत्रण में ले लिया।

इंदौर: मशहूर हनीट्रैप कांड की मुख्य आरोपी श्वेता जैन फिर गिरफ्तार, कारोबारी चिट्ठू ठाकुर से मांगी थी भारी रंगदारी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

इंदौर। मध्य प्रदेश के बहुचर्चित और सबसे बड़े ‘हनीट्रैप कांड’ की मुख्य आरोपी श्वेता जैन एक बार फिर सलाखों के पीछे पहुंच गई हैं। इस बार मामला इंदौर के बड़े कारोबारी चिट्ठू ठाकुर से रंगदारी (उगाही) और ब्लैकमेलिंग का है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए श्वेता जैन के साथ-साथ इस साजिश में शामिल एक पुलिसकर्मी विनोद शर्मा, सह-आरोपी अलका दीक्षित और उसके बेटे को भी गिरफ्तार कर लिया है। इस हाई-प्रोफाइल गिरफ्तारी के बाद से इंदौर के प्रशासनिक और सियासी गलियारों में एक बार फिर हड़कंप मच गया है।

कारोबारी को जाल में फंसाकर रची बड़ी साजिश

मिली जानकारी के अनुसार, हनीट्रैप गिरोह की सरगना श्वेता जैन ने जेल से बाहर आने के बाद अपनी पुरानी आदतों के तहत एक नए शिकार को जाल में फंसाया। इंदौर के प्रतिष्ठित कारोबारी चिट्ठू ठाकुर को पहले अलग-अलग तरीकों से जाल में उलझाया गया और फिर उनकी कुछ कथित अश्लील रिकॉर्डिंग्स और निजी जानकारीयों के दम

प्रादेशिक

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अदालत से राहत, लेकिन तब तक सब कुछ तबाह!
अब इस कहानी में एक नया मोड़ आया है। अदालतों ने कई मामलों में की गई कानूनी कार्यवाही को रद्द कर दिया है और अहमद ए.आर. बुहारी जेल से बाहर आ चुके हैं। तकनीकी और कानूनी रूप से बुहारी अब आजाद हैं, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। एक उद्योगपति अपनी आज़ादी, अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और अपनी सालों की मेहनत से खड़ी की गई कंपनी-तीनों खो चुका था।

इस पूरे घटनाक्रम से खड़े होते हैं 3 गंभीर सवाल:

1 क्या जांच एजेंसियां निष्पक्ष हैं?

क्या श्रष्ट और अन्य केंद्रीय एजेंसियां बिना किसी राजनीतिक या कॉरपोरेट दबाव के स्वतंत्र रूप से काम कर रही हैं, या फिर उनका इस्तेमाल किसी खास एजेंडे के तहत किया जा रहा है?

2 क्या बड़े कॉरपोरेट समूहों को सरकारी मशीनरी का लाभ मिल रहा है?

क्या यह महज एक इतोफाक है कि जब भी कोई बड़ी कंपनी संकट में आती है या उसका प्रमोटर जेल जाता है, तो देश के गिने-चुने बड़े कॉरपोरेट समूह ही उन संपत्तियों



पर भारी-भरकम रकम (रंगदारी) की मांग की गई। रकम न देने पर कारोबारी की सामाजिक प्रतिष्ठा को पूरी तरह बर्बाद करने और झूठे केस में फंसाने की धमकी दी जा रही थी।

खाकी भी दागदार: पुलिसकर्मी ने निभाई बहाम भूमिका इस पूरे ब्लैकमेलिंग रैकेट की सबसे चौंकाने वाली कड़ी पुलिसकर्मी विनोद शर्मा का शामिल होना है। आरोप है कि विनोद शर्मा कानून की रक्षा करने के बजाय श्वेता जैन के इस काली कमाई के धंधे में पार्टनर बना हुआ था। वह कारोबारी चिट्ठू ठाकुर पर पुलिसिया कार्रवाई का खौफ पैदा कर पैसे देने का दबाव बना रहा था। वहीं, अलका दीक्षित और उसके बेटे ने इस पूरी साजिश को जमीन पर अमलीजामा पहनाने और पैसों के लेन-देन की रूपरेखा तैयार करने में मुख्य भूमिका निभाई।

याद दिला दें कि श्वेता जैन वही महिला है, जिसका नाम साल 2019 में मध्य प्रदेश के उस ऐतिहासिक ‘हनीट्रैप स्कैंडल’ में आया था, जिसने सूबे की सियासत और ब्यूरोक्रेसी की नाँव हिला दी थी। तब श्वेता जैन और उसके गिरोह ने सूबे के कई मंत्रियों, रसूखदार नेताओं और शीर्ष आईएएस-आईपीएस अफसरों को हुस्न के जाल में फंसाकर करोड़ों की उगाही की थी और कई सरकारी टेंडर हथियाए थे। पीड़ित कारोबारी चिट्ठू ठाकुर की शिकायत पर इंदौर पुलिस ने बिना वक्त गंवाए जाल बिछाया और पुख्ता सबूतों के आधार पर श्वेता जैन, पुलिसकर्मी विनोद शर्मा, अलका दीक्षित और उसके बेटे को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपियों के पास से कई डिजिटल सबूत, मोबाइल फोन और दस्तावेज जब्त किए गए हैं, जिनकी बारीकी से जांच की जा रही है। पुलिस यह भी पता लगा रही है कि जेल से छूटने के बाद इस गिरोह ने चिट्ठू ठाकुर के अलावा और कितने कारोबारियों या रसूखदारों को अपनी ब्लैकमेलिंग का शिकार बनाया है। कोर्ट में पेश कर आरोपियों की रिमांड मांगी जा रही है ताकि इस रैकेट के पूरे नेटवर्क को ध्वस्त किया जा सके।

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भीनमाल। ई-फार्मेसी (ऑनलाइन दवाओं की बिक्री) और नकली दवाओं के कारोबार के खिलाफ भीनमाल कैमिस्ट एसोसिएशन ने मोर्चा खोल दिया है। एसोसिएशन के आह्वान पर क्षेत्र के सभी मेडिकल स्टोर पूरी तरह बंद रहे।

बिना डॉक्टर के पर्चे के बिक रही नशीली और एंटीबायोटिक दवाएं

कैमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष रमेश दवे और सचिव मूलसिंह राव के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कैमिस्ट तहसील कार्यालय पहुंचे। मीडिया प्रभारी कृष्ण मोदी ने बताया कि ई-फार्मेसी प्लेटफॉर्मस पर बिना किसी वैध प्रिस्क्रिप्शन (डॉक्टर के पर्चे) के धड़ल्ले से नशीली और भारी मात्रा में एंटीबायोटिक दवाएं बेची



को खरीदने के लिए कतार में सबसे आगे खड़े मिलते हैं? क्या सरकारी मशीनरी अप्रत्यक्ष रूप से इनके लिए रास्ता साफ करती है?

3 नुकसान की भरपाई कौन करेगा?

अगर अंत में अदालत में केस टिकते ही नहीं और आरोपी बेदाग छूट जाते हैं, तो प्रमोटर के जीवन के बहुमूल्य वर्ष, उसकी मानसिक प्रताड़ना और अरबों रुपये के कारोबार के नुकसान की भरपाई कौन करेगा? क्या इसके लिए जांच एजेंसियों की जवाबदेही तय नहीं होनी चाहिए?

ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित कलेक्टर की समीक्षा के बाद चार दिन में 921 वेंडर्स का ऋण प्रकरण स्वीकृत एवं 79 को ऋण वितरण

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना अंतर्गत स्ट्रीट वेंडर्स को निजी व्यवसाय के लिए व्यक्तिगत ऋण प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है। योजना का क्रियान्वयन जिले के नगरीय निकायों में निवासरत छोटे व्यावसायियों से भी पीएम स्वनिधि के वेबसाइट में ऑनलाईन आवेदन लिया जा रहा है। कलेक्टर जितेन्द्र यादव के निर्देशानुसार बैंकर्स द्वारा ऋण प्रकरणों में वृद्धि करते हुए बैंकों द्वारा एक सप्ताह के भीतर 921 वेंडर्स के प्रकरण स्वीकृत कर 79 ऋण वितरण किया गया है। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का लाभ लेने जिले के निकाय क्षेत्र के शहरी पथ विक्रेता एवं छोटे दुकानदारों द्वारा विभिन्न बैंकों में ऋण लेने ऑनलाईन आवेदन किया गया है। पात्र व्यवसायियों को बैंकों द्वारा प्रकरणों पर स्वीकृति प्रदान करते हुए पात्र नागरिकों को ऋण का वितरण कर लाभान्वित किया जा रहा है। योजनांतगत बैंकों के माध्यम से तीन स्तर में ऋण देने का प्रावधान है। प्रथम ऋण राशि 15 हजार रूपए, प्रथम ऋण अदायगी करने पर द्वितीय ऋण 25 हजार रूपए एवं द्वितीय ऋण अदायगी करने पर तृतीय ऋण 50 हजार रूपए का ऋण देने का प्रावधान है। योजनांतगत ऋण पर हितग्राही द्वारा नियमित रूप से ऋण अदायगी करने पर बैंक द्वारा ली जाने वाली ब्याज राशि में 7 प्रतिशत की राशि अनुदान के रूप में देने का प्रावधान किया गया है। कलेक्टर जितेन्द्र यादव द्वारा वाणिज्यिक बैंकों की बैठक लेकर प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना अंतर्गत ऋण प्रकरणों के प्रगति की जानकारी ली गई। योजनांतर्गत जिले के बैंकों को 6006 प्रकरण प्रेषित किये गये थे। जिसमें से बैंकों द्वारा कुल 3562 ऋण प्रकरणों में स्वीकृति प्रदान करते हुए 4131 प्रकरणों पर ऋण वितरण किया गया।

ऑनलाइन फार्मेसी के खिलाफ भीनमाल में मेडिकल स्टोर पूरी तरह बंद; प्रधानमंत्री के नाम तहसीलदार को सौंपा झापन

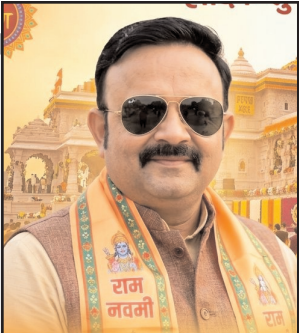
महानगर मेट्रो ब्यूरो

भीनमाल। ई-फार्मेसी (ऑनलाइन दवाओं की बिक्री) और नकली दवाओं के कारोबार के खिलाफ भीनमाल कैमिस्ट एसोसिएशन ने मोर्चा खोल दिया है। एसोसिएशन के आह्वान पर क्षेत्र के सभी मेडिकल स्टोर पूरी तरह बंद रहे।

जो रही हैं। इससे युवाओं में नशे की लत बढ़ रही है और लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ हो रहा है । एसोसिएशन ने मांग की है कि देश और जनता के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सरकार इस पर तुरंत सख्त कदम उठाए। प्रदर्शन के दौरान कैमिस्ट संजीव माथुर ने कहा कि ऑनलाइन माध्यमों से नकली और अवैध दवाओं की बिक्री का ग्राफ तेजी से बढ़ा है, जिसे रोकने में मौजूदा तंत्र विफल साबित हो रहा है। एसोसिएशन ने चेतावनी दी है कि यदि सरकार ने ऑनलाइन फार्मेसी पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया और नकली दवा बेचने वालों पर त्वरित कार्रवाई नहीं की, तो आंदोलन को और उा किया जाएगा। इस देशव्यापी विरोध प्रदर्शन के समर्थन में भीनमाल के सभी छोटे-बड़े मेडिकल स्टोर बंद रहने से मरीजों को दवाइयों के लिए थोड़ी परेशानी जरूर हुई, लेकिन केमिस्टों ने एकजुटता दिखाकर सरकार तक अपनी आवाज पहुंचाई। इस अवसर पर कैमिस्ट एसोसिएशन के संरक्षक मुकेश बाफ्ना, गुमान सिंह राव, कलश शर्मा, धुखाराम चौधरी, चैतराज परमार, परखायाम चौधरी, सह-सचिव हीरालाल घांची, उपाध्यक्ष वचनाराम पुरोहित, गेमाराम चौधरी, अभीम खान, नरेंद्र सिंह गोहिल, मदेश चौधरी, प्रदीप जाट, जावेद खान, पहलवान खान, मदन माली सहित सैकड़ों की संख्या में स्थानीय केमिस्ट और दवा व्यवसायी उपस्थित रहे।



चीन-अमेरिका की निकटता से भारत के सामने वैश्विक चुनौतियाँ



पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

आज अमेरिका और चीन मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था के लगभग 44 प्रतिशत हिस्से को प्रभावित करते हैं। विश्व व्यापार, तकनीकी विकास, ऊर्जा बाजार, वैश्विक निवेश, वित्तीय संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक निर्णयों पर इन दोनों देशों का गहरा प्रभाव है। ऐसे में इनके संबंधों में किसी भी प्रकार का बदलाव पूरी दुनिया की दिशा बदलने की क्षमता रखता है।

संपादकीय

कोर्ट की सख्ती के मायने

इसमें दो राय नहीं कि स्थानीय निकायों द्वारा आवारा कुत्तों को हटाने के संबंध में विगत में दिए अपने निर्देशों को नरम न करने का सर्वोच्च न्यायालय का हालिया निर्णय, बिगड़ते जन-सुरक्षा संकट में एक आवश्यक हस्तक्षेप है। हाल के वर्षों में, देश भर में स्थानीय प्रशासन व निकाय कुत्तों के काटने की घटनाओं में लगातार हो रही चिंताजनक वृद्धि को देखते हैं। उनके अगले साल 2024 में रोकथाम के कोई ठोस प्रयास न होने के कारण 37 लाख मामले दर्ज किए गए। आंकड़े बता रहे हैं कि औसतन प्रतिदिन दस हजार घटनाएं सामने आ रही हैं। वहीं कई राज्यों व शहरों में इन घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है। हाल ही में सामने आए केरल के आंकड़ों के अनुसार, वहां एक साल के भीतर ही 3.6 लाख से अधिक कुत्तों के काटने के मामले सामने आए हैं। वहीं दूसरी दिल्ली से सटे नोएडा में कुछ ही महीनों में हजारों शिकायतों के बाद हॉस्पिटल की पहचान की गई। इन शिकायतों में स्कूलों के पास उनका जमावड़ा होना, चलने में असमर्थ बुजुर्ग नागरिकों का शिकार बनना व आम नागरिकों के आवारा कुत्तों के भय में जीने के मामले उजागर हुए हैं। दरअसल, विगत में भी इस संकट के कारण समाधान के लिये शीर्ष अदालत ने सख्त निर्देश दिए थे। स्थानीय नगर निगम व नगर पालिकाओं की जवाबदेही तय की थी कि कुत्तों को शेल्टर होम ले जाकर उनकी नसबंदी की जाए और टीकाकरण किया जाए। लेकिन इस दिशा में कारणर पहल होती नजर नहीं आई। वहीं तस्वीर का दूसरा पहलू है कि यह संकट समाज और संस्थाओं द्वारा जानवरों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार में परेशान करने वाली विफलता को भी दर्शाता है। पिछले दिनों चंडीगढ़ से एक स्तब्धकारी घटना ने हर किसी संवेदनशील व्यक्ति को विचलित किया,जब एक अज्ञात व्यक्ति ने एक पिल्ले को धधकते तंदूर में फेंककर जिंदा जला दिया। ऐसे शर्मनाक कृत्य उस भयावह क्रूरता को उजागर करते हैं, जो सार्वजनिक चचाओं में उजागर नहीं होती। इस घटना ने इन जीवों की दयनीय स्थिति को ही उजागर किया। वहीं भूख से बिलबिलाते कुत्तों द्वारा कथित तौर पर अपने ही बच्चों को खाने के मामले भी शामिल हैं। शीर्ष अदालत की इस टिप्पणी से सहमत हुआ जा सकता है कि जानवरों के साथ मानवीय व्यवहार का मतलब नागरिकों की सुरक्षा की इनादेखी करना नहीं हो सकता। लेकिन इसके साथ ही जन सुरक्षा को पशु कल्याण की उपेक्षा का बहाना भी नहीं बनाया जा सकता है। निरसंह, सुप्रीम कोर्ट द्वारा कानूनी रूप से जानवरों को स्थानांतरित करने पर दिए गए जोर के साथ अब आश्रय स्थलों, नसबंदी केंद्रों, टीकाकरण अभियानों और पशु चिकित्सा सुविधाओं में अधिक निवेश करने की सख्त जरूरत है। निश्चय ही यह चुनौती एक जटिल विषय है।

चितन-मनन

गतिशील रहें

एक यात्री जा रहा था। अंधेरी रात थी। उसे लम्बा रास्ता तय करना था। एक व्यक्ति ने उसे लालटेन देते हुए कहा, इसके प्रकाश में तुम अपना रास्ता देख पाओगे। मार्ग सुख से कटेगा। इसे ले जाओ। उस यात्री ने देखा कि लालटेन का प्रकाश तीन-चार फीट तक फैल रहा है। उसके मन में संदेह हुआ कि रास्ता बहुत लंबा है। प्रकाश केवल तीन-चार फीट तक ही पड़ता है। रास्ता पार कैसे कर पाऊंगा? वह उलझ गया और उलझता ही गया। वह बोला, तीन-चार फीट का प्रकाश मुझे दस मील की यात्रा कैसे करा पाएगा?

यह विधि को न समझने के कारण है। विधि को समझे बिना साधक उलझ जाते हैं। विधि को ठीक समझ लेते हैं तो तीन-चार फीट का प्रकाश दस मील की यात्रा करा सकता है। यह प्रकाश दस मील के पूरे पथ को प्रकाशित कर सकता है। आप चलते चलेँ, दस मील का रास्ता प्रकाशित हो जाएगा और यदि उसी बिन्दु पर खड़े रह गए तो दो फीट का रास्ता ही प्रकाशित होगा, शेष अंधकार ही अंधकार रहेगा। आवश्यकता है चलने की, सतत गतिशील रहने की। विधि को समझें और चलेँ। विधि को समझना ही पर्याप्त नहीं है, चलना भी पड़ेगा। आगे से आगे बढ़ना होगा। यदि नहीं चले, रुके रह गए तो प्रकाश जहां पड़ता है वहीं पड़ेगा, वह आगे नहीं बढ़ेगा। वह तभी बढ़ेगा, जब हम बढ़ेंगे। वह हमारे रुकने के साथ रुकेगा और बढ़ने के साथ बढ़ेगा। अभ्यास करते जाएँ। आप अपनी मंजिल तक पहुंच जायें। मंजिल स्वतः मिल जायगी।



दुनिया एक बार फिर ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ी दिखाई दे रही है जहाँ दो महाशक्तियों-अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते संवाद, आपसी मुलाकातों और कूटनीतिक समीकरणों को केवल द्विपक्षीय संबंधों के रूप में नहीं देखा जा सकता। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच संवाद और संभावित समझौतों को लेकर पूरी दुनिया में चचाओं का दौर चल रहा है। एक वर्ग इसे विश्व अर्थव्यवस्था के लिए राहतकारी कदम मान रहा है, क्योंकि इससे बढ़ती महंगाई, व्यापारिक अवरोधों और युद्धजन्य संकटों में कमी आने की उम्मीद व्यक्त की जा रही है, वहीं दूसरी ओर अनेक विशेषज्ञों का मानना है कि यह निकटता भविष्य में एक ऐसे विश्व संरचना को जन्म दे सकती है जहाँ दुनिया की दिशा पुनः कुछ महाशक्तियों के हाथों में सिमट जाए और विकासशील तथा अर्धविकसित देशों के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी हो जाएँ। भारत जैसे देशों के लिए यह परिस्थिति अवसर और चुनौती दोनों लेकर आई है। आज अमेरिका और चीन मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था के लगभग 44 प्रतिशत हिस्से को प्रभावित करते हैं। विश्व व्यापार, तकनीकी विकास, ऊर्जा बाजार, वैश्विक निवेश, वित्तीय संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक निर्णयों पर इन दोनों देशों का गहरा प्रभाव है। ऐसे में इनके संबंधों में किसी भी प्रकार का बदलाव पूरी दुनिया की दिशा बदलने की क्षमता रखता है। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध, टैरिफ विवाद, तकनीकी प्रतिबंध और ताइवान से जुड़े तनावों ने विश्व अर्थव्यवस्था को गहरे संकट में डाला। कोरीना महामारी के बाद वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ टूट गईं, रूस-यूक्रेन युद्ध ने ऊर्जा संकट बढ़ाया और पश्चिम एशिया के संघर्षों ने दुनिया को अस्थिरता की ओर धकेला। इन परिस्थितियों में यदि अमेरिका और चीन संवाद और सहयोग की दिशा में आगे बढ़ते हैं तो इससे वैश्विक आर्थिक स्थिरता को बल मिल सकता है। विश्व अर्थव्यवस्था के संदर्भ में देखा जाए तो अमेरिका और चीन के बीच तनाव कम होने से सबसे पहले वैश्विक बाजारों को राहत मिलेगी। निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा, आपूर्ति श्रृंखलाओं में सुधार होगा और इलेक्ट्रॉनिक्स, ऊर्जा, तकनीक तथा विभिन्न क्षेत्रों में लागत घट सकती है। इससे महंगाई पर भी नियंत्रण संभव है। किंतु यह केवल तस्वीर का एक पक्ष है। दूसरा पक्ष यह है कि यदि दोनों महाशक्तियाँ वैश्विक व्यापारिक नियमों और आर्थिक नीतियों को अपने हितों के अनुसार तय करने लगें तो छोटे देशों की आर्थिक स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। दुनिया पहले भी उपनिवेशवाद और आर्थिक नियंत्रण की राजनीति देख चुकी है, अब आशंका यह है कि कहीं आर्थिक वैश्वीकरण का नया स्वरूप



महाशक्तियों के संयुक्त वर्चस्व में परिवर्तित न हो जाए। इसी संदर्भ में हूज्जी-2६५ यानी अमेरिका और चीन केंद्रित विश्व व्यवस्था की चर्चा तेज हुई है। कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विश्व धीरे-धीरे बहुध्रुवीय व्यवस्था से हटकर दो महाशक्तियों के प्रभाव वाले ढाँचे की ओर बढ़ सकता है। यदि ऐसा हुआ तो वैश्विक नीतियों, व्यापारिक समझौतों और सुरक्षा संबंधी निर्णयों में छोटे देशों की भूमिका सीमित हो सकती है। यह स्थिति भारत जैसे देशों के लिए वैश्विक चिंता का विषय है क्योंकि भारत हमेशा से बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और सामूहिक वैश्विक नेतृत्व का समर्थक रहा है। भारत की स्थिति यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत न तो पूरी तरह अमेरिकी खेमे में है और न ही चीन के प्रभाव क्षेत्र में। भारत ने लंबे समय से रणनीतिक स्वायत्तता की नीति अपनाई है। अमेरिका के साथ भारत के रक्षा, तकनीकी और आर्थिक संबंध लगातार मजबूत हुए हैं। क्वाड जैसे मंचों में भारत की सक्रिय भूमिका है। दूसरी ओर चीन भारत का पड़ोसी देश है और दोनों देशों के बीच सीमा विवादों के बावजूद व्यापारिक संबंध व्यापक हैं। यही कारण है कि अमेरिका और चीन की बढ़ती निकटता भारत के लिए केवल बुरी घटना नहीं बल्कि रणनीतिक पुनर्मूल्यांकन का विषय है। भारत और चीन की तुलना करें तो चीन ने पिछले तीन दशकों में विनिर्माण, निर्यात, आधारभूत संरचना और तकनीकी उत्पादन के माध्यम से स्वयं को वैश्विक उत्पादन केंद्र के रूप में स्थापित किया। चीन की आर्थिक नीति केंद्रीकृत और तीव्र निर्णय क्षमता वाली रही है। इसके विपरीत

भारत का विकास लोकतांत्रिक व्यवस्था, विविधता और संस्पागत संतुलन पर आधारित रहा है। भारत की शक्ति उसकी युवा आबादी, लोकतंत्र, सेवा क्षेत्र और डिजिटल क्षमता में निहित है, जबकि चीन की शक्ति विनिर्माण, निर्यात और पूंजी निवेश में रही है। अमेरिका के साथ चीन के संबंधों में सुधार होने की स्थिति में भारत के सामने यह चुनौती होगी कि वह अपनी आर्थिक और रणनीतिक उपयोगिता को और अधिक प्रभावशाली बनाए।

भारत के लिए सबसे बड़ा अवसर हूचाइना प्लस वनहू रणनीति में निहित है। अमेरिका और पश्चिमी देशों ने पिछले वर्षों में चीन पर निर्भरता कम करने की दिशा में प्रयास किए हैं। अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चीन के विकल्प के रूप में भारत, वियतनाम और अन्य देशों की ओर बढ़ी हैं। भारत यदि अपनी औद्योगिक नीतियों, आधारभूत संरचना, श्रम सुधार और तकनीकी क्षमता को मजबूत करता है तो वह वैश्विक निवेश का प्रमुख केंद्र बन सकता है। किंतु यदि भारत आवश्यक गति से सुधार नहीं कर पाया तो यह अवसर अन्य देशों के पास चला जाएगा। तकनीकी क्षेत्र में भी अमेरिका-चीन संबंधों का भारत पर सीधा प्रभाव पड़ेगा। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, क्वांटम कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा और रेयर अर्थ मिनरल्स नई शक्ति राजनीति के केंद्र बन चुके हैं। अमेरिका तकनीकी श्रेष्ठता बनाए रखना चाहता है जबकि चीन तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। भारत इन दोनों के बीच एक तीसरे विकल्प के रूप में उभर सकता है, लेकिन इसके लिए अनुसंधान, नवाचार और शिक्षा

पश्चिम बंगाल में काली के पुजारियों का भत्ता बंद

मार्च माह से धार्मिक नेताओं के भत्ते में 500 रुपए प्रतिमाह की वृद्धि की थी। पश्चिम बंगाल में मस्जिदों के 2000 रुपए को हर महीने 3000 रुपए तथा पुजारियों के इमाम को हर महीने 3000 रुपए तथा पुजारियों के इमाम को हर महीने 3000 रुपए तथा पुजारियों के इमाम को हर महीने 3000 रुपए की मदद दी जा रही थी। भाजपा की सरकार ने अब यह मानदेय बंद करने का निर्णय लिया है। इसका असर संपूर्ण पश्चिम बंगाल में हिन्दू-मुस्लिम के बीच होना तय है। पश्चिम बंगाल में काली की पूजा होती है। पश्चिम बंगाल में पूजा में बली और खाने-पीने में मांसाहार का बड़ा उपयोग होता है। बंगाल में हजारों की संख्या में पुजारियों को यह मानदेय मिल रहा था। पुजारियों को आशा थी, नई सरकार इमाम और पुश्चिम बंगाल का भत्ता बंद करेगी। हिंदू पुजारियों को 3000 रुपए महीने का मानदेय देने का निर्णय करेगी। सरकार ने दोनों समुदाओं के धार्मिक गुरुओं का भत्ता बंद कर दिया है। पश्चिम बंगाल से जो खबरें आ रही हैं, उसके अनुसार पश्चिम बंगाल में हिंदुओं को दो अलग-अलग भागों में बांटा जा रहा है। हजारों वर्ष पूर्व हिंदुओं में वैष्णव और शैव शाक्त के बीच में विवाद होते रहे हैं। हिन्दू समुदाय तीन भागों में बटे हुए थे। शुभेंदु सरकार ने

पश्चिम बंगाल में इसी विवाद को फिर से खड़ा कर दिया है। भाजपा ने पश्चिम बंगाल का चुनाव हिंदुओं के नाम पर लड़ा है। हिंदू पुजारियों को आशा थी, उनका मानंदेय बढ़ाया जाएगा। सरकार ने बढ़ाने के स्थान पर बंद कर दिया है। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी जय श्री राम के उद्घोष के साथ वहां पहुंची है। बड़ी संख्या में उत्तर भारत के लोग पश्चिम बंगाल में रह रहे हैं। सरकार के इस निर्णय से बंगाली पुजारियों में जबरदस्त नाराजी देखने को मिल रही है। उनका मानना है वह शाक्त भक्त हैं, मां काली की पूजा करते हैं। काली की तांत्रिक पूजा अलग तरह की होती है, जिसे वैष्णव और शैव स्वीकार नहीं करते हैं। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं की सरकार बनने के बाद सरकार, पश्चिम बंगाल के पुजारियों के साथ हिन्दुओं में जो भेदभाव कर रही है। उससे यह धारणा बन रही है, पश्चिम बंगाल में सुवेुद्ध अधिकारी की सरकार हिंदुओं को हिंदुओं के बीच में बांटने का काम कर रही है। पश्चिम बंगाल में पहली बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। प्रारंभ में ही यदि इस तरह के भेदभाव की भावना हिंदुओं के बीच में जागृत होती है, तो यह

राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस : रक्तरीजित राहों पर शांति का संकल्प

टॉलरेंस की भावना विकसित करने का संदेश भी देता है इस दिन देशभर के सरकारी कार्यालयों, स्कूलों और कॉलेजों में अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों द्वारा आतंकवाद विरोधी शपथ ली जाती है। इस प्रतिज्ञा में बिना किसी धर्म या संप्रदाय का नाम नहीं लिया जायेगा और सभी वर्गों के बीच शांति, सामाजिक सद्भाव और आपसी समझ को बढ़ावा देने तथा विघटनकारी शक्तियों से लड़ने का संकल्प लिया जाता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों और संस्थानों में बाद-विवाद प्रतियोगिताएं, सेमिनार, व्याख्यान और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथा आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में शहीद हुए जवानों और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

राजीव गांधी की हत्या भारतीय इतिहास की सबसे चर्चित आतंकी घटनाओं में से एक थी। यह हमला श्रीलंका के उग्रवादी संगठन लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम यांनी एलटीटीई द्वारा किया गया था। एक महिला आत्मघाती हमलावर 'थानु' (धनु) ने फूलों का हार पहनाने के बहाने विस्फोट कर दिया, जिसमें राजीव गांधी की मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद भारत की आंतरिक सुरक्षा और वीआईपी सुरक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए गए। विशेष सुरक्षा समूह यानी विशेष सुरक्षा समूह(एसपीजी) के नियमों को अत्यंत सख्त बनाया गया तथा पूर्व प्रधानमंत्रियों और उनके परिवारों की भी सुरक्षा दायरे में लाया गया।

यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि एलटीटीई यानी कि लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम श्रीलंका का एक अलगाववादी गुरिल्ला संगठन था, जिसने श्रीलंका के उत्तर और पूर्वी भागों में तमिलों के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्र तमिल ईलम की मांग को लेकर लगभग तीन दशकों तक सशस्त्र संघर्ष किया। इसकी स्थापना वर्ष 1976 में वेलुपिल्लई प्रभाकरन द्वारा की गई थी। प्रभाकरन अंत तक इस संगठन का सर्वोच्च और तानाशाही कमांडर बना रहा। एलटीटीई का आत्मघाती दस्ता ब्लैक टाइगर्स कहलाता था, जिसे दुनिया के सबसे खतरनाक और अनुशासित आत्मघाती दस्तों में गिना जाता था।दरअसल, श्रीलंका (तत्कालीन सीलोन) को वर्ष 1948 में स्वतंत्रता मिलने के बाद वहाँ बहुसंख्यक सिंहली समुदाय और अल्पसंख्यक तमिलों के बीच जातीय तनाव बढ़ने लगा। तमिलों का आरोप था कि सरकारी नीकरियों, शिक्षा और नागरिकता के मामलों में उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है। इसी असंतोष ने धीरे-धीरे उग्रवाद का रूप ले लिया और एलटीटीई जैसे संगठन का जन्म हुआ। शुरुआत में श्रीलंका में तमिलों पर हो रहे अत्याचारों के

में बड़े निवेश की आवश्यकता होगी। भारत के पास प्रतिभा है, लेकिन प्रतिभा को वैश्विक नेतृत्व में बदलने के लिए दीर्घकालिक दृष्टि चाहिए।

भू-राजनीतिक दृष्टि से भी यह परिवर्तन महत्वपूर्ण है। ताइवान, दक्षिण चीन सागर, रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया के संकटों पर अमेरिका और चीन की भूमिका निर्णायक है। यदि दोनों देशों के बीच समझ बढ़ती है तो सैन्य टकरावों की आशंका कम हो सकती है। इससे वैश्विक ऊर्जा बाजार स्थिर होगा और तेल की कीमतों में राहत मिल सकती है। भारत जैसे ऊर्जा आयातक देश के लिए यह अत्यंत लाभकारी स्थिति होगी। लेकिन यदि दोनों महाशक्तियाँ अपने प्रभाव विस्तार के लिए संकटों का उपयोग करती हैं तो विश्व अस्थिरता और बढ़ सकती है। भारत की विदेश नीति के लिए यह समय अत्यंत निर्णायक है। भारत को अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखते हुए चीन के साथ व्यावहारिक संबंधों का संतुलन बनाना होगा। साथ ही उसे वैश्विक दक्षिण यानी विकासशील देशों के नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी भूमिका और मजबूत करनी होगी। जी-20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने जिस हूवन अर्थ, वन फैमिली, वन प्यूचरहू की अवधारणा प्रस्तुत की थी, वह भविष्य की विश्व व्यवस्था का वैकल्पिक मॉडल बन सकती है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो अमेरिका और चीन वन जंगल की शक्ति विनिर्माण, निर्यात हुए हैं, वहीं भारत सहअस्तित्व, संवाद और बहुपक्षीय सहयोग की नीति पर चल रहा है। अमेरिका और चीन की प्रतिस्पर्धा शक्ति प्रदर्शन पर आधारित है जबकि भारत का दृष्टिकोण विकास, मानवीय मूल्यों और वैश्विक साझेदारी पर केंद्रित रहा है। यही भारत की विशिष्टता और शक्ति है। आज दुनिया में यह आशंका भी व्यक्त की जा रही है कि क्या अमेरिका और चीन मिलकर दुनिया को पुनः अपने प्रभाव क्षेत्र में बाँटने का प्रयास करेंगे? क्या छोटे देशों की भूमिका सीमित हो जाएगी? क्या फिर वही स्थिति बनेगी जब महाशक्तियाँ विश्व राजनीति को अपनी उँलियों पर नचाती थीं? इन प्रश्नों के उत्तर भविष्य के गर्भ में हैं, लेकिन इतना निश्चित है कि आज की दुनिया शीत युद्ध काल की दुनिया नहीं है। भारत, जापान, यूरोपीय संघ, ब्राजील, आसियान और अफ्रीकी देशों का बढ़ता प्रभाव विश्व व्यवस्था को बहुध्रुवीय बनाए रखने में सक्षम है। भारत को इस बदलती परिस्थिति में अपने संकल्पों को सुदृढ़ करना होगा, विकास के नए मानक गढ़ने होंगे और अपनी रणनीतिक क्षमता को विस्तार देना होगा। क्योंकि बदलती दुनिया में प्रश्न यह नहीं है कि अमेरिका और चीन क्या करेंगे, बल्कि यह है कि भारत स्वयं को किस ऊँचाई पर स्थापित करेगा।

हिंदू एकता को लेकर भाजपा को नुकसान पहुंचा सकता है। चुनाव प्रचार के दौरान यह मामला कहीं ना कहीं सामने आया था। उत्तर भारत के जो नेता पश्चिम बंगाल के चुनाव प्रचार में गए थे। उन्होंने सार्वजनिक रूप से मांस और मछली खाकर यह विश्वास दिलाया था, वह बंगाल की संस्कृति और बंगाल की धार्मिक परंपरा के साथ कोई अन्याय नहीं करेंगे। सरकार बनने के बाद जिस तरह से कालीभक्त पुजारियों के मानदेय को सरकार ने बंद किया है। उसके बाद वहां पर कहा जा रहा है, वर्तमान सरकार काली भक्तों को पसंद नहीं करती है। पश्चिम बंगाल की धार्मिक संस्कृति में भगवान राम और अन्य हिंदू देवी देवता जो शैव और वैष्णव संप्रदाय से आते हैं, उन्हें पश्चिम बंगाल में साक्त भक्तों में स्थापित करने की कोशिश की जा रही है। पश्चिम बंगाल में जिस तरह से चुनाव हुए हैं। लाखों की संख्या में अर्ध सैनिक बल तैनात किया गया। लगभग एक करोड़ मतदाताओं के नाम काटे गए। पश्चिम बंगाल के बाहर से अधिकारियों को लाकर चुनाव कार्य में लगाया गया।

भारत ने यह भी कहा है कि जिन देशों में आतंकवाद से निपटने की क्षमता का अभाव है, उनकी सहायता की जानी चाहिए। भारत सदैव पंचशील, शांति, संयम और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों में विश्वास करता आया है तथा धर्म, जाति, संस्कृति और आस्था से परे हर प्रकार के आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा करता रहा है। हाल फिलहाल,यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस साल यानी कि वर्ष 2026 में भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा प्रहार नामक भारत की पहली व्यापक राष्ट्रीय आतंकवाद-रोधी नीति जारी की गई है। इसका उद्देश्य आतंकवाद, कट्टरपंथ, साइबर हमलों, ड्रोन खतरों तथा संगठित आतंकी नेटवर्क से समन्वित तरीके से निपटना है। नवें में 19 मई, हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नावों में 19 मई 2026 मंगलवार को तीसरे भारत-नार्डिक समिट में हिस्सा लिया है, जहां नावें, डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड और स्वीडन के नेता जुटे। अच्छी बात यह है कि इस समिट के दौरान सभी नेताओं ने हर प्रकार के आतंकवाद और कट्टरपंथ की कड़ी निंदा करते हुए सीमापार आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त कार्रवाई की ज़रूरत बताई है। इतना ही नहीं,इस समिट के दौरान जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हमले की भी कड़े शब्दों में निन्दा की गई है।

बहरहाल, आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज में शांति, सद्भाव, सहयोग और भाईचारे की भावना को मजबूत किया जाए। आतंकवाद से लड़ना केवल सरकारों या सुरक्षा एजेंसियों का कार्य नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है। हमें मानव जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए हर प्रकार की विघटनकारी शक्तियों के विरुद्ध सतत रहना होगा।

अंत में किसी कवि की इन प्रेरणादायक पंक्तियों के साथ बात समाप्त करना उचित होगा-हर घर में दीप जलाना होगा, आतंकवाद के अँधेरे को मिटाना होगा।'अ' से अमरद, 'च' से चरखा छोड़, 'अ' से अमन, 'च' से चैन पढ़ाना होगा। मेरी धरती, मेरा देश छोड़, हमारी धरती, हमारा देश सिखाना होगा। हर एक देश के नागरिक को अब, देश का परहेदार बनाना होगा। धरती मैं की छाती से 'आतंकवाद' को मिटाना होगा। वास्तव में राष्ट्रीय आतंकवादविरोधी दिवस हमें यह संदेश देता है कि हिंसा कभी भी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकती। शांति, संवाद, शिक्षा और मानवीय मूल्यों के माध्यम से ही आतंकवाद जैसी चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। यह दिवस प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र की एकता, अखंडता और मानवता की रक्षा के लिए सजग रहने की प्रेरणा देता है।



तमिलनाडु की सत्ता में 59 साल के बाद वापसी करेगी कांग्रेस, सीएम विजय की कैबिनेट में कल होगी शामिल

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु की राजनीति में करीब छह दशक बाद बड़ा राजनीतिक बदलाव देखने को मिलने जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री. जोसेफ विजय गुरुवार को अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करने जा रहे हैं और इस विस्तार में कांग्रेस की सरकार में औपचारिक एंट्री लगभग तय मानी जा रही है। बताया जा रहा है कि कांग्रेस के दो विधायक मंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। इस तरह करीब 59 साल बाद कांग्रेस तमिलनाडु की सत्ता में सीधे भागीदारी करती नजर आएगी। सूत्रों के मुताबिक, टीवीके और कांग्रेस के बीच सत्ता में हिस्सेदारी को लेकर सहमति बन चुकी है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने भी संकेत दिए हैं कि पार्टी सरकार में शामिल होने जा रही है। लंबे समय तक द्रविड़ राजनीति के प्रभाव वाले तमिलनाडु में कांग्रेस ज्यादातर समय डीएमके या एआईएएमके के साथ गठबंधन में रही, लेकिन उसे कभी सरकार में जगह नहीं मिली। अब विजय सरकार में कांग्रेस की एंट्री को दक्षिण भारतीय राजनीति में बड़े बदलाव के तौर पर देखा जा रहा है। राजनीतिक जानकार मान रहे हैं कि यह कदम 2026 के चुनावी समीकरणों को प्रभावित कर सकता है। एक तरफ विजय अपनी सरकार को और मजबूत करना चाहते हैं, वहीं कांग्रेस दक्षिण भारत में अपनी पकड़ मजबूत करने की रणनीति पर काम कर रही है। इस बीच टीवीके ने अपने अन्य सहयोगी दलों को भी सरकार में शामिल होने का न्योता दिया है। मंत्री आधव अर्जुना ने कहा कि मुख्यमंत्री चाहते हैं कि वीसीके प्रमुख थोले थिरुमावलवन भी मंत्रिमंडल का हिस्सा बनें। इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के साथ भी बातचीत जारी है।

अस्पताल के बाहर सलमान का पैपराजी पर फूटा गुस्सा... क्या तुम लोग पागल हो गए हो

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान मुंबई के हिंदुजा अस्पताल के बाहर पैपराजी पर भड़क गए। किसी करीबी से मिलने पहुंचे सलमान की नाराजगी तब सामने आई जब कुछ फोटोग्राफर्स ने अस्पताल जैसे संवेदनशील स्थान पर हंगामा शुरू किया। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जानकारों के मुताबिक, सलमान के बाहर आते ही कुछ पैपराजी ने उनकी आने वाली फिल्म ‘मातृभूमि’ का नाम जोर-जोर से पुकारना शुरू किया। इस पर गुस्साए सलमान ने पूछ, फ्रवया तुम लोग पागल हो गए हो?फ़ उन्होंने पैपराजी से सवाल किया कि अगर उनके परिवार का कोई सदस्य अस्पताल में भर्ती हो, तब क्या उन्हें भी इस तरह कैमरा और शोर-शराबा का सामना अच्छे लगोगा। अभिनेता के गुस्से को देखकर मौके पर मौजूद पैपराजी ने तुरंत माफ़ी मांगी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। इसके बाद सलमान खान ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा कर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने लिखा कि मीडिया ने हमेशा उनका साथ दिया है, लेकिन अस्पताल जैसी जगह पर किसी उनकी निजी पलों को सनसनी बाना टीक नहीं है। उन्होंने संवेदनशीलता की कमी पर जोर देकर कहा, ‘मैं 60 साल का हूँ, लेकिन लड़ना नहीं भूला।’

आईआरसीटीसी लाया गर्मियों में चारधाम यात्रा का खास मौका

नई दिल्ली। (एजेंसी)। गर्मियों की छुट्टियां शुरू होने वाली हैं और इस दौरान पहाड़ों की ओर रुख करने वाले परिवारों के लिए आईआरसीटीसी बेहतरीन मौका लेकर आया है। रेलवे की सहायक कंपनी आईआरसीटीसी ने 2026 के लिए अपने विशेष चारधाम यात्रा पैकेज की घोषणा की है, जिसमें यात्रियों की सुविधा का पुरा ध्यान रखा जाएगा। पैकेज के तहत उत्तराखंड के प्रसिद्ध चार धामों यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ के दर्शन कराए जाएंगे। यह 11 रात और 12 दिन का पैकेज दिल्ली से शुरू होगा और श्रद्धालुओं को आरामदायक एसी ट्रेपो ट्रेवलर से यात्रा कराई जाएगी। यात्रियों के लिए टहरने हेतु अच्छे होटलों की व्यवस्था की जाएगी, साथ ही नाश्ते से लेकर रात के खाने तक की सुविधा और प्रतिदिन 1 लीटर पानी की बोतल भी प्रदान की जाएगी। 2026 में यात्रा की तारीखें जून (1, 12, 24), सितंबर (1, 12, 24) और अक्टूबर (1, 15) हैं। प्रति व्यक्ति खर्च इस प्रकार निर्धारित किया गया है। अकेले रुकने पर 75,000, दो लोगों के साथ 62,000 और तीन तीन लोगों के साथ 57,000।वहीं, 5 से 11 साल के बच्चे के लिए (एक्स्ट्रा बेड सहित) 30,000 और बिना एक्स्ट्रा बेड के 20,000 का खर्च आएगा। यह पैकेज परिवार के साथ देवभूमि का आध्यात्मिक अनुभव लेने का एक शानदार अवसर है।

देहरादून के पैनेसिया अस्पताल में भीषण आग, महिला मरीज की मौत ; कई अन्य झुलसे

देहरादून (एजेंसी)। देहरादून के पैनेसिया हॉस्पिटल में भीषण आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। हादसे में आईसीयू में भर्ती एक 55 वर्षीय महिला मरीज की मौत हुई, जबकि छह अन्य मरीज और बचाव कार्य में जुटे तीन पुलिसकर्मी भी झुलस गए। प्राथमिक जानकारी के अनुसार, आग एसी में ल्पस्ट होने के कारण लगी, जिसने अस्पताल परिसर में धुएँ और भगदड़ का माहौल पैदा हुआ। हादसे के बाद अस्पताल को आनन-फानन में खाली कराया गया और कई मरीजों को एंबुलेंस के जरिए दूसरे अस्पतालों में शिफ्ट किया गया। कैनाल अस्पताल में भर्ती कराए गए छह झुलसे मरीजों में से दो की हालत गंभीर बनी हुई है। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड, पुलिस और प्रशासनिक टीम मौके पर पहुंची। दमकल कर्मियों ने काफी मशकत के बाद आग पर काबू पाया। फायर विभाग ने आग लगने के वास्तविक कारणों की विस्तृत जांच शुरू कर दी है। यह घटना फिर देहरादून के निजी अस्पतालों में अग्निशमन सुरक्षा मानकों की अनदेखी और कमजोर व्यवस्थाओं को उजागर करती है। राजधानी के अधिकांश अस्पताल सीमित जगह, संकरे रास्तों और अपर्याप्त इमरजेंसी एजिट के साथ संघर्षित हो रहे हैं, जिससे एसी आपात स्थितियों में बचाव कार्य बाधित होता है और मरीजों की जान खतरने में पड़ती है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आग लगने के बाद पूरे परिसर में धुआं भर गया था, जिससे मरीजों को सांस लेने में दिक्कत होने लगी। फायर ऑउट और मौक ड्रिल जैसे महत्वपूर्ण इंतजाम अवसर केवल कामगजों तक ही सीमित रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी दुर्घटनाएँ सामने आती रहती हैं। प्रशासन आमतौर पर ऐसी घटनाओं के बाद ही सक्रिय होता है, लेकिन कुछ समय बाद फिर वही लापरवाही दोहराई जाती है, जो गंभीर मरीजों की जिंदगी को खतरे में डालती है।

आरएसएस और प्रधानमंत्री संविधान को फाड़ने की कोशिश कर रहे-राहुल गांधी

रायबरेली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं रायबरेली से कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भाजपा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर निशाना साधा। राहुल गांधी ने संविधान की एक प्रति हाथ में लेकर कहा कि भाजपा, प्रधानमंत्री और आरएसएस इसे फाड़ने और फेंकने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि आरएसएस ने तो इसे पहले ही फाड़ दिया है। राहुल गांधी ने कहा कि यह संविधान की किताब सिर्फ कागज का पत्रा नहीं है, बल्कि इसमें डॉ. भीमराव अंबेडकर, महात्मा गांधी और वीरा पासी जैसे अनर्गलत लोगों का खून और पसीना मिला हुआ है, जिन्होंने इसे बनाने में अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

बुधवार को रायबरेली के लोधवारी में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने वीरा पासी की प्रतिमा का लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने बहुजन स्वाभिमान सभा को संबोधित किया। अपने



सम्वोधन में उन्होंने कहा कि संविधान देश की आत्मा है और इसकी रक्षा करना हर नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने एक बार फिर देश की आर्थिक स्थिति पर चिंता व्यक्त की और कहा कि देश में एक बड़ा आर्थिक तूफान आने वाला है। उन्होंने प्रधानमंत्री और गृहमंत्री पर देश के साथ धोखा करने का आरोप लगाया।

वहीं, गौरीगंज क्षेत्र के तेजी का पुरवा स्थित

कार्यक्रम स्थल पर आयोजित कार्यक्रमों सम्मेलन में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने केंद्र सरकार, भाजपा और आरएसएस पर जमकर निशाना साधा। सम्मेलन में हजारों की संख्या में पहुंचे कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि देश की रक्षा संविधान करता है और पिछले 12 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने लगातार संविधान पर हमला किया है। उन्होंने कहा कि उनका

इकरा हसन के समर्थन में उतरे अखिलेश बोले- गुनाह तो बताइए?

सहारनपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में समाजवादी पार्टी की सांसद इकरा हसन और पुलिस अधिकारियों के बीच तीखी नोकझोंक के बाद राजनीतिक माहौल पूरी तरह गरमा गया है। सांसद इकरा हसन ने पुलिस प्रशासन पर जबरन थाने में बिठाये और हिरासत में लेने का आरोप लगाया है। इस घटना के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव उनके समर्थन में उतर आए हैं और उन्होंने सपा के व पुलिस की कार्यवाणीाल पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

यह पूरा विवाद तब शुरू हुआ जब कैराना से सपा सांसद इकरा हसन जसला गांव की एक बुजुर्ग महिला के साथ पुलिस उपमहानिरीक्षक (डीआईजी) से मिलने पहुंची थीं। महिला के बेटे की कथित तौर पर हत्या कर दी गई थी और वे इस मामले की निष्पक्ष जांच की मांग कर रही थीं। सांसद का आरोप है कि पीड़ित पक्ष की मांगों को अनसुना कर दिया गया। जब वे कार्यालय के बाहर पार्किंग एरिया में दूसरी अजी तैयार कर रही थीं, तभी भारी पुलिस बल ने वहां पहुंचकर उन पर ट्रैफिक व्यवस्था में बाधा डालने का आरोप लगाया। इकरा हसन के अनुसार, उन्हें और उनके साथियों को गाड़ी में बिठकर महिला पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहां करीब 10 मिनट तक हिरासत में रखने के बाद उन्हें रिहा किया गया। सांसद ने ट्रैफिक बाधित करने के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि उनके पास गाड़ी

सही जगह पार्क होने के वीडियो साक्ष्य मौजूद हैं।

इस घटना के बाद मामला तब और बड़ गया जब शांति भंग करने के आरोप में पूर्व राज्य मंत्री मंगराम कश्यप सहित पांच सपा नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इसकी जानकारी मिलते ही इकरा हसन तुरंत सदर बाजार पुलिस स्टेशन पहुंचीं और गिरफ्तार नेताओं की रिहाई की मांग को लेकर धरने पर बैठ गईं। इस दौरान उनकी पुलिस अधिकारियों से तीखी बहस भी हुई। सांसद के समर्थन में बड़ी संख्या में सपा कार्यकर्ता थाने पहुंचे, जिसके चलते इलाके में भारी पुलिस बल तैनात करना पड़ा। इस पूरे घटनाक्रम पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए सपा मुखिया अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा कि जब किसी को सिर्फ न्याय के

लिए आवाज उठाने की वजह से हिरासत में ले लिया जाता है, तो वही पल कलियुग होता है। उन्होंने पूछा कि पार्टी की सांसद का अपराध बस इतना था कि वह उस मां की मदद कर रही थीं जिसने अपना बेटा खो दिया है और जो इस संवेदनहीन शासन में न्याय के लिए भटक रही है। अखिलेश यादव ने कहा कि इस तरह की तानाशाही को अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और इसके खिलाफ आवाज उठाई जाएगी। फिलहाल, थाने के बाहर सपा कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन और इस मामले को लेकर सियासी बयानबाजी लगातार जारी है।

डिटेक्शन और डिलीशन का काम हो चुका पूरा अब डिपोर्टेशन का होगा शुरू

–बंगाल में अवैध प्रवासियों को बाहर निकालने को लेकर सीएम अधिकारी बोले

कोलकाता(एजेंसी)। पश्चिम बंगाल से कथित अवैध प्रवासियों को बाहर निकालने को लेकर सीएम सुबेंदु अधिकारी ने कहा कि वोटर लिस्ट से डिक्शन और डिलीशन का काम पहले ही हो चुका है और डिपोर्टेशन जल्द ही शुरू होगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने जनगणना की प्रक्रिया शुरू कर दी है, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया कि तुणमूल सरकार ने देरी की थी। शुधेंघु ने कहा कि पहले हमने वोटर लिस्ट में अवैध निवासियों का पता लगाया, फिर हमने उन्हें लिस्ट से हटा दिया और अब उन्हें देश से निकालने का समय आ गया है। हालांकि, उन्होंने इसके लिए कोई समय-सीमा नहीं बताई।

मोडिया रिपोर्ट के मुताबिक अधिकारी ने कहा कि मैं डरने वाला, झुकने वाला आदमी नहीं हूँ, डराने का काम करने का कांई जरूरत नहीं है। बीजेपी ने जो कमिटमेंट दिया है, वो पूरा करने का काम बीजेपी का सीएम करेगा। राष्ट्र प्रथम है, देश को सुस्थित रखने का काम बीजेपी करेगी। सीएम अधिकारी ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा कि मेरे सीएम बनने से यहां



टीएमसी, सीपीएम और कांग्रेस तनाव में हैं और अशांति पैदा कर रहे हैं, लेकिन इन सबसे कहीं ज्यादा तनाव और परेशानी बांग्लादेश के लोगों, विशेषकर भरोसा दिया। अधिकारी ने एलान किया है कि आरजी कर अस्पताल से लेकर कामदुनी, पार्क स्ट्रीट, कस्बा लॉ कॉलेज और बोगतुई तक महिलाओं के खिलाफ किए गए अत्याचार के हर एक मामले की काब कानूनी जांच की जाएगी और दोषियों को सजा का काम करेगा।

भ्रष्टाचार के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि उन्होंने

अल-नीनो ने दिखाया असर तो मानसून होगा कमजोर, मंडरा रहा खतरा

–चावल और अन्य खरीफ फसलों के उत्पादन पर पड़ सकता है असर

नई दिल्ली (एजेंसी)। महंगाई, गर्मी और मौसम की मार झेल रहे लोगों के सामने अब एक और बड़ा खतरा मंलाने लगा है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि इस साल अल-नीनो का असर भारतीय मानसून को कमजोर कर सकता है, जिससे चावल और अन्य खरीफ फसलों के उत्पादन पर असर पड़ सकता है। खासतौर पर यूपी, बिहार, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में स्थिति चिंताजनक हो सकती है, जहां बड़ी आबादी का मुख्य भोजन चावल है।

मोडिया रिपोर्ट के मुताबिक हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

(आईसीएआर) के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन में सामने आया है कि अल-नीनो वाले सालों में देश के कई जिलों में खरीफ फसलों की पैदावार में भारी गिरावट आई थी। अध्ययन के मुताबिक पिछले अल-नीनो वर्षों के दौरान 77 जिलों में चावल का उत्पादन 10 फीसदी से ज्यादा घट गया था। वहीं मक्का उत्पादन भी 65 जिलों में गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। इसके अलावा ज्वार और बाजरा जैसी फसलों की पैदावार में भी कई जिलों में 10 फीसदी से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई।

शोधकर्ताओं के मुताबिक अल-नीनो की स्थिति तब बनती है जब प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी हिस्से में समुद्र की सतह तापमान सामान्य से ज्यादा गर्म हो जाता है। इसका सीधा असर भारतीय मानसून पर पड़ता

है और बारिश कम होती है। मानसून कमजोर होने से खरीफ सीजन की खेती प्रभावित होती है, जिससे धान, मक्का और अन्य फसलों का उत्पादन घट जाता है। यह अध्ययन 2023 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें 2002, 2004 और 2009 जैसे प्रमुख अल-नीनो वर्षों का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन में पाया कि आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, झारखंड और ओडिशा के कई जिलों में धान की पैदावार में उल्लेखनीय कमी आई थी। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि इस साल भी अल-नीनो का प्रभाव रहा तो खरीफ फसलों के लिए स्थिति चुनौतीपूर्ण हो सकती है। इसी बीच उत्तर भारत में भीषण गर्मी ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। दिल्ली और आसपास के इलाकों में तापमान 43

डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका है, जबकि आने वाले दिनों में इसमें 45 डिग्री तक जाने की संभावना है।

मौसम विभाग ने कई क्षेत्रों के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। ऐसे हालात में यदि मानसून कमजोर रहता है तो खेती और जल संसाधनों दोनों पर दबाव बढ़ सकता है। आईसीएआर के कृषि भौतिकी विभाग से जुड़े वैज्ञानिकों का मानना है कि सरकार को अभी से तैयारी शुरू करनी होगी। सूखा सहन करने वाली फसल किस्मों को बढ़ावा देना, किसानों को मौसम आधारित सलाह उपलब्ध करना, सिंचाई व्यवस्था मजबूत करना और जिला स्तर पर वैकल्पिक रणनीतियां तैयार करना बेहद जरूरी होगा। वैज्ञानिकों ने यह भी कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण अल-नीनो जैसी



घटनाएँ अब ज्यादा देखने को मिल रही हैं, इसलिए पारंपरिक खेती पद्धतियों में बदलाव समय की मांग बन चुका है। किसानों की चिंता

इस बात को लेकर भी है कि यदि दमघर पर पर्याप्त बारिश नहीं हुई तो धान की बुवाई और उत्पादन दोनों प्रभावित होंगे।

डीपफेक और एआई कंटेंट के खिलाफ अदालत पहुंचे राघव चड्ढा, दिल्ली हाई कोर्ट में दायर की याचिका

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा सांसद राघव चड्ढा ने अपने पर्सनैलिटी राइट्स और निजता अधिकारों को लेकर दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख किया है। राघव चड्ढा ने अदालत में याचिका दाखिल कर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रसारित हो रहे डीपफेक वीडियो, छेड़छाड़ किए गए विजुअल, कृत्रिम आवाज क्लॉनिंग और भ्रमक डिजिटल सामग्री पर रोक लगाने की मांग की है। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति सुब्रमणियम प्रसाद की अदालत में 21 मई को होने वाली है।

याचिका में कहा गया है कि एआई तकनीक और डिजिटल प्लेटफॉर्मस के बढ़ते इस्तेमाल के बीच कई बार सार्वजनिक हस्तियों की आवाज, चेहरा और बयान को तोड़-मरोड़कर पेश किया जा रहा है। इससे न केवल उनकी छवि प्रभावित होती है, बल्कि लोगों के बीच भ्रम की स्थिति भी पैदा होती है। राघव चड्ढा ने अदालत से मांग की है कि बिना अनुमति उनके नाम, आवाज, तस्वीर और व्यक्तित्व का इस्तेमाल कर तैयार किए गए किसी भी फर्जी कंटेंट पर तत्कात रोक लगाई जाए। हाल के वर्षों में डीपफेक तकनीक को लेकर देशभर में चिंता लगातार बढ़ी है। राजनीतिक नेताओं, फिल्म कलाकारों और खिलाड़ियों से जुड़े कई फर्जी वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं। इससे पहले अभिनेता अनिल कपूर और अमिताभ बच्चन भी अपने व्यक्तित्व अधिकारों की रक्षा के लिए अदालत का दरवाजा खटखटा चुके हैं और उन्हें राहत भी मिली थी। अब राघव चड्ढा की याचिका को डिजिटल निजता और एआई नियंत्रण से जुड़े बड़े कानूनी मुद्दे के तौर पर देखा जा रहा है।



निर्मला सीतारमण पर प्रियंका चतुर्वेदी का तंज... कहां थीं मैम?

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (उद्धव

बालासाहेब ठाकरे) की नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर तीखा तंज कस दिया है। उन्होंने वित्त मंत्री से सीधे सवाल किया कि जब देश की अर्थव्यवस्था चुनौतियों का सामना कर रही थी, तब वह कहां थीं। शिवसेना यूबीटी नेता चतुर्वेदी का बयान सीतारमण के उस टवीट के जवाब में आया है, जिसमें वित्त मंत्री ने मोदी सरकार द्वारा विभिन्न वर्गों के लिए किए गए कार्यों का उल्लेख किया था।

शिवसेना यूबीटी नेता चतुर्वेदी ने व्यांगात्मक लहजे में कहा, हालेलुया! हमारी वित्त मंत्री वापस आ गई हैं! देश जानना चाहता था कि जब डॉलर मजबूत हो रहा था (ध्यान दें, मैंने यह नहीं कहा कि रुपया कमजोर हो रहा था), जब प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) और संस्थागत विदेशी निवेशक (एफआईआई) नदारद थे, जब शेयर बाजार धराशायी हो रहा था और सोना-चांदी



खरीदना मना हो गया था, तब मैम कहां थीं?

यह तंज वित्त मंत्री सीतारमण के उस बयान के बाद आया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि 2014 से सरकार अपनी नीतियों से समाज के हर वर्ग किसान, गरीब, महिलाएं, युवा और एमएसएमई

की सेवा कर रही है, और वे उनके शासन ढांचे के मूल केंद्र में हैं।

इस दौरान सीतारमण ने कांग्रेस से पूछ था कि क्या 58 करोड़ जनघन खाते, 57 करोड़ मुद्रा लोन, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम इंटरशिप

पीएम मोदी की तारीफ कर पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार ने विपक्ष में डाली फूट ?

नई दिल्ली। (एजेंसी)। वरिष्ठ राजनीतिज्ञ और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) गुट के प्रमुख शरद पवार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश यात्राओं का समर्थन कर कहा है कि राजनीतिक मतभेदों को दरकिनार कर देश के सम्मान को सर्वोपरि रखना चाहिए। उनकी यह टिप्पणी तब आई है जब विपक्षी दल, खासकर कांग्रेस, पीएम मोदी की विदेशी यात्राओं की कड़ी आलोचना कर रही हैं, लेकिन पवार के बयान से विपक्ष की एकता पर सवाल उठ खड़े हुए हैं। एक कार्यक्रम में पवार ने स्पष्ट किया कि भले ही उनके राजनीतिक विचार अलग हों, लेकिन जब देश के बाहर भारत की प्रतिष्ठा की बात होती है, तब सभी को एकजुट होना चाहिए। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी भारत के बाहर देश की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं। हमारे राजनीतिक विचार अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन जब देश के सम्मान की बात आती है, तब राजनीतिक मतभेदों को बीच में नहीं लाना चाहिए। उन्होंने जोर दिया कि राष्ट्रीय हित में काम करने के मौके पर दलों को भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को मजबूत करने के साझा उद्देश्य के साथ आना चाहिए। एनसीपी (शरदचंद्र पवार) गुट के प्रमुख पवार ने पूर्व प्रधानमंत्रियों इंदिरा गांधी, पी.वी. नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह का उदाहरण दिया, जिन्होंने अपने नेतृत्व में देश के भविष्य और प्रतिष्ठा को हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उनकी यह टिप्पणी लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा प्रधानमंत्री मोदी की चाल रही पांच देशों की यात्रा की आलोचना करने के तुरंत बाद आई है। राहुल गांधी ने कहा था कि इस संकट के समय में प्रधानमंत्री मोदी लोगों से विदेश यात्रा न करने की अपील कर रहे हैं, जबकि वे स्वयं दुनिया घूम रहे हैं। एक प्रमुख विपक्षी नेता द्वारा प्रधानमंत्री मोदी के समर्थन में दिए गए बयान ने निश्चित रूप से समूचे विपक्ष की एकजुटता और साझा रणनीति पर नए सिरे से चर्चा छेड़ दी है, खासकर तब जब आगामी चुनावों के भेदनजर विपक्षी मोर्चा बनाने की कवायद चल रही है।

ममता बनर्जी का बड़ा दावा : दिल्ली की सत्ता से जल्द हटेगी भाजपा सरकार

–बुलडोजर संस्कृति के खिलाफ आंदोलन चलाने का किया एलान

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में हार का सामना करने के बाद तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भाजपा पर तीखा हमला बोला है। कालीघाट स्थित अपने आवास पर पार्टी विधायकों की बैठक को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने दावा किया कि आने वाले दिनों में भाजपा को केंद्र की सत्ता से हटा दिया जाएगा। राज्य के हालिया विधानसभा चुनाव में भाजपा ने जीत दर्ज की है, जिसके साथ ही राज्य में पिछले 15 सालों से चला आ रहा तुणमूल कांग्रेस का शासन समाप्त हो गया है। इस हार के बाद भी टीएमसी नेगुल्व ने स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा के खिलाफ उनकी राजनीतिक लड़ाई जारी रहेगी।

ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि राज्य में नई सरकार के आने के बाद से अल्पसंख्यक समुदायों और सड़क किनारे दुकान लगाने वाले हॉर्कस को जानबूझकर

निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तथाकथित तानाशाही और बुलडोजर संस्कृति के कारण जनता में रोष बढ़ेगा, जो अंततः केंद्र की सरकार को सत्ता से बाहर कर देगा। इसके विरोध में टीएमसी ने कोलकाता, बालीगंज, हावड़ा जंक्शन और सिर पर विरोध प्रदर्शन शुरू करने की घोषणा की है। उन्हें उम्मीद है कि यह जन-आंदोलन भाजपा के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी माहौल तैयार करेगा।

बैठक में टीएमसी के महासचिव अभिषेक बनर्जी ने भी वर्तमान मुख्यमंत्री पर सीधा हमला बोला। उन्होंने साफ किया कि केंद्रीय एजेंसियों के नोटिस या दंडात्मक कार्रवाइयों के आगे वे झुकने वाले नहीं हैं और भाजपा के खिलाफ उनका संघर्ष जारी रहेगा।

दूसरी तरफ, चुनाव के नतीजे आने के बाद राज्य के कई हिस्सों से हिंसा, आगजनी और झड़पों को खबरें आई हैं। इस मामले में

टीएमसी ने कानूनी रास्ता अपनाते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की है। याचिका में आरोप लगाया गया है कि चुनाव परिणामों के बाद टीएमसी कार्यकर्ताओं और उनके कार्यालयों को निशाना बनाया जा रहा है। मामले की गंभीरता को देखते हुए ममता बनर्जी खुद

कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस की अदालत में पेश हुईं। उन्होंने अदालत से मांग की है कि प्रभावित कार्यकर्ताओं को तुरंत सुरक्षा दी जाए और इस पूरी हिंसा की कोर्ट की निगरानी में

निष्पक्ष जांच कराई जाए। उल्लेखनीय है कि इस विधानसभा चुनाव में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ऐतिहासिक बहुमत के साथ राज्य में अपनी सरकार बनाई है, जबकि सत्ताधारी टीएमसी केवल 80 सीटों पर सिमट गई है। इस राजनीतिक उलटफेर के बाद राज्य में माहौल पूरी तरह गरमाया हुआ है।

शेयर बाजार हल्की बढ़त पर बंद

संसेक्स 117, निफ्टी 41 अंक उछला

मुम्बई (ईएमएस)। भारतीय शेयर बाजार बुधवार को हल्की तेजी के साथ बंद हुआ। आज एशियाई बाजारों में गिरावट के साथ ही दुनिया भर के बाजारों से मिलेजुले संकेतों से बाजार में उतार-चढ़ाव बना रहा पर रिलायंस इंडस्ट्रीज, हिंडाल्को इंडस्ट्रीज और बजाज ऑटो के तेजी से भी बाजार को बल मिला। इसी कारण, दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स

117.54 अंक बढ़कर 75,318.39 अंक पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 41 अंक उछलकर 23,659 अंक पर बंद हुआ। आज रिलायंस के अलावा बजाज फिनसर्व, ट्रेट, इंडिगो, एक्सिस बैंक, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एनटीपीसी और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयरों में भी तेजी रही। वहीं दूसरी ओर बीईएल, टेक महिंद्रा, टाटा स्टील, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आईटीसी, भारतीय एयरटेल और

इन्फोसिस के शेयरों में गिरावट आई। निफ्टी के शेयरों में हिंडाल्को में सबसे ज्यादा तेजी रही। वहीं ब्रॉड बाजार में निफ्ट मिडकैप में 0.49 फीसदी और निफ्टी स्मॉलकैप में 0.04 फीसदी तेजी आई। निफ्टी ऑयल एंड गैस और निफ्टी ऑटो में तेजी रही जबकि निफ्टी मीडिया और निफ्टी एफएमसीजी में गिरावट आई। वहीं इससे पहले आज सुबह शेयर बाजार की कमजोर शुरुआत रही। सुबह सेंसेक्स 500 के करीब

दूटकर 74,681 के स्तर पर कारोबार करता दिखा। वहीं निफ्टी भी 150 अंकों से ज्यादा गिरकर 23,464 के स्तर पर पहुंच गया। आज दुनिया भर के बाजारों की बात करें तो अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में उछाल से एशियाई बाजारों पर दबाव पड़ा। अमेरिकी और ईरान के बीच जारी तनाव के कारण भी अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में तेजी रही। दूसरी ओर एशियाई बाजारों में जापान का निकेई 225 करीब 1.29 फीसदी और दक्षिण कोरिया



का कोसी करीब 0.93 फीसदी नीचे आया। डाओ जॉस करीब करीब 0.65 फीसदी गिरा। वहीं एस&डपी 500 भी 0.67 फीसदी नीचे आया। नेसडेक कंपोजिट भी 0.84 फीसदी टूटा।



मुम्बई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया 30 पैसे की गिरावट के साथ ही 96.85 पर बंद हुआ। आज सुबह रुपया डॉलर के मुकाबले अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया। ये पहली बार 96 के स्तर से आगे निकल गया। ये शुरुआती कारोबार में 96.89 प्रति डॉलर के रिकॉर्ड निचले स्तर तक गिरा। वहीं गत दिवस रुपया 96.53 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। बुधवार को इसकी शुरुआत 96.86 के स्तर पर हुई। पिछले पांच कारोबारी सत्रों में रुपया करीब 1 रुपये तक कमजोर हो चुका है। रुपये पर सबसे अधिक दबाव कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण आया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेट क्रूड

की कीमत 110 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर पहुंच गयी हैं। आज ब्रेट क्रूड करीब 111 डॉलर प्रति बैरल के आसपास कारोबार करता दिखा। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और भू-राजनैतिक अनिश्चितता के कारण भी कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव आया है। इससे भारत पर भी दबाव आया है। भारत को काफी तेल आयात करना पड़ता है। ऐसे में कच्चा तेल महंगा होने से डॉलर की मांग बढ़ती है और रुपये पर दबाव बढ़ जाता है। रुपये की कमजोरी की दूसरी बड़ी वजह अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में तेजी और वैश्विक बाजारों में बढ़ती अनिश्चितता है। निवेशक सुनिश्चित निवेश की तरफ जा रहे हैं, जिससे डॉलर मजबूत हो रहा है। डॉलर मजबूत होने से भी भारतीय रुपये पर दबाव आया है।

मारुति सुजुकी ने लखनऊ में खोली स्मार्ट फैक्ट्री लैब

युवाओं को मिलेगा आधुनिक प्रशिक्षण

लखनऊ ।

मारुति सुजुकी इंडिया ने अपनी कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) पहल के तहत लखनऊ में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सुजुकी कंपनी ने सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज में एक अत्याधुनिक स्मार्ट फैक्ट्री लैब की स्थापना की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य डिप्लोमा छात्रों को आधुनिक विनिर्माण तकनीकों में व्यावहारिक प्रशिक्षण देना है। यह लैब अपने पहले वर्ष में करीब 400 छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार किया गया है। यहां छात्रों को स्वचालन, उद्योग 4.0, औद्योगिक इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईआईओटी), न्यूमेटिक्स, ऊर्जा मापन और गति नियंत्रण प्रणालियों सहित उन्नत औद्योगिक तकनीकों का सीधा अनुभव मिलेगा। यह पहल अकादमिक शिक्षा और उद्योग की बढ़ती आवश्यकताओं के बीच के अंतर को पाटने में सहायक होगी। कंपनी का मानना ​​है कि इस अत्याधुनिक लैब के माध्यम से छात्रों में उद्योग के लिए आवश्यक सही मानसिकता विकसित होगी, उनकी रोजगार क्षमता बढ़ेगी और तकनीकी दक्षता मजबूत होगी।

इसका अंतिम लक्ष्य छात्रों को भविष्य के लिए तैयार पेशेवर बनाना है, जो देश के कार्यबल में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के कॉर्पोरेट मामलों के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी ने कहा, स्मार्ट फैक्ट्री लैब के उद्घाटन के साथ, हम सरकार के स्किल इंडिया मिशन के अनुरूप भविष्य के लिए तैयार पेशेवर तैयार कर रहे हैं। ये लैब विनिर्माण क्षेत्र की बदलती जरूरतों को पूरा करने, कौशल अंतर को कम करने और छात्रों में उद्योग-विशेष उपकरणों के उपयोग में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए अनुभवात्मक शिक्षण के अवसर प्रदान करेगी। कंपनी ने भारत और जापान सरकार के सहयोग से चार जापान-भारत विनिर्माण संस्थान (जेआईएम) भी स्थापित किए हैं। इसके अतिरिक्त, ऑटोमोटिव विनिर्माण के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उद्योग-विशेष व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए 18 आईटीआई में एडवांस्ड मैयूफैक्चरिंग लैब (एमएफएल) भी स्थापित की गई हैं। यह कदम युवाओं को उद्योग की मांगों के अनुरूप तैयार करने की मारुति की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सेंसेक्स 118 अंक चढ़कर 75,318 पर बंद

निफ्टी में भी 41अंक की तेजी रही; रुपए 96.89 के रिकॉर्ड लो पर

मुंबई। सेंसेक्स बुधवार को 118 अंक चढ़कर 75,318 पर बंद हुआ। निफ्टी में भी 41 अंकों की तेजी रही, ये 23,659 पर पहुंच गया। बुधवार के कारोबार में ऑटो, रियल्टी और बैंकिंग शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी रही। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए 33 पैसे टूटकर

भारत के अरबपतियों की संपत्ति 1 ट्रिलियन डॉलर हुई, 26 नए अरबपति बने

मुकेश अंबानी भारत और एशिया के सबसे अमीर तो अडाणी दूसरे नंबर पर

मुंबई ।

भारत के अरबपतियों की कुल संपत्ति पहली बार 1 ट्रिलियन डॉलर यानी करीब 83 लाख करोड़ रुपए के आंकड़े को पार कर गई है। हाल ही में 26 नए अरबपतियों के जुड़ने के बाद भारत अब अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा अरबपतियों वाला तीसरा देश बन गया है। देश में अरबपतियों की कुल संख्या बढ़कर 229 हो गई है। फोर्ब्स की ताजा सूची के मुताबिक रिलायंस इंडस्ट्रीज के

चेयरमैन मुकेश अंबानी करीब 100 बिलियन डॉलर की संपत्ति के साथ भारत और एशिया के सबसे अमीर इसान बने हुए हैं। गौतम अडानी दूसरे नंबर पर हैं, जबकि उद्योगपति परिवार की प्रमुख सावित्री जिंदल देश की सबसे अमीर महिला के रूप में तीसरे नंबर पर हैं। इस सूची में स्टील कारोबारी लक्ष्मी मितल चौथे और एचसीएल टेक्नोलॉजीज के संस्थापक शिव नादर पांचवें नंबर पर हैं। रिपोर्ट के मुताबिक इस साल लक्ष्मी मितल की संपत्ति में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी हुई है, जिससे वे साल के सबसे बड़े

गेनर बनकर उभरे हैं। वहीं, भारतीय उद्योग जगत में पारंपरिक कारोबारियों के साथ नए दौर के टेक उद्यमियों की मौजूदगी भी तेजी से बढ़ रही है। मुंबई अब भी भारतीय अरबपतियों का सबसे बड़ा केंद्र है। वित्त, उद्योग, शेयर बाजार और स्टार्टअप निवेश का प्रमुख केंद्र होने के कारण मुंबई में सबसे ज्यादा अरबपति रहते हैं। विशेषज्ञों का मानना ​​है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की तेज वृद्धि, डिजिटल कारोबार का विस्तार और स्टार्टअप संस्कृति ने संपत्ति निर्माण की रफ्तार को नई ऊंचाई दी है। इस बार की सूची में कई युवा

और नए चेहरे भी शामिल हुए हैं। खासतौर पर एआई, फिनटेक और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों से जुड़े उद्यमियों ने तेजी से अपनी पहचान बनाई है। इनमें 31 साल के अरविंद श्रीनिवास जैसे युवा फाउंडर्स का नाम भी प्रमुखता से सामने आया है। विशेषज्ञों का मानना ​​है कि भारत में बढ़ती उद्यमिता, निवेशकों का विश्वास और तकनीक आधारित कारोबार आने वाले सालों में अरबपतियों की संख्या और संपत्ति दोनों को और बढ़ा सकते हैं। इससे भारत की वैश्विक आर्थिक स्थिति भी मजबूत होने की उम्मीद है।

मेटा ने किया हजारों कर्मचारियों की छंटनी का ऐलान, एआई का असर

कंपनी ने चरणबद्ध तरीके से छंटनी की सूचनाएं भेजना किया शुरु

नई दिल्ली ।

मेटा प्लेटफॉर्म में बुधवार को करीब 8,000 कर्मचारियों की छंटनी का ऐलान किया। इसकी वजह एआई के कारण संगठन का पुनर्गठन है। इसकी जानकारी कई रिपोर्ट्स में दी गई। फेसबुक की पेरेंट कंपनी ने चरणबद्ध तरीके से छंटनी की सूचनाएं भेजना शुरू कर दिया है, जिससे वैश्विक स्तर पर उसके करीब 10 फीसदी कर्मचारियों के प्रभावित होने और भूमिकाओं में बदलाव होने की

उम्मीद है। रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि एक इंटरनल मेमो में मेटा की पुनर्गठन प्रक्रिया के तहत करीब 7,000 कर्मचारियों को एआई-केंद्रित नई भूमिकाओं में स्थानांतरित करने की योजना का जिक्र किया है। रिपोर्ट के मुताबिक कर्मचारियों को भेजे गए एक मेमो में मेटा की एचआर चीफ जेनेल गेल ने कहा कि कई टीमों को एआई-आधारित सिद्धांतों के आधार पर पुनर्गठित किया जा रहा है ताकि सरल संरचनाएं और छोटे समूह बनाए

जा सकें जो ज्यादा जिम्मेदारी के साथ तेजी से काम किया जा सके। गेल ने कहा कि बदलावों पर काम करते हुए कई टीमों ने एआई-आधारित डिजाइन सिद्धांतों को अपनी नई संगठनात्मक संरचनाओं में शामिल किया। रिपोर्ट के मुताबिक उत्तरी अमेरिकी कर्मचारियों को भी छंटनी के प्रभावों होने वाले दिन घर से काम करने के लिए कहा गया था, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका पालन मेटा ने पिछली छंटनी घोषणाओं के दौरान भी किया था।

यह पुनर्गठन ऐसे समय में हो रहा है जब मेटा एआई बुनियादी ढांचे पर खर्च में काफी बढ़ोतरी कर रहा है। इसके अलावा कंपनी ने 2026 के लिए 125 अरब डॉलर से 145 अरब डॉलर के बीच पूंजीगत व्यय का अनुमान लगाया है, जो मुख्य रूप से एआई डेटा केंद्रों, कस्टम चिप और मॉडल प्रशिक्षण पर केंद्रित है। सीईओ मार्क जकरबर्ग ने कर्मचारियों को बताया कि एकत्रित डेटा का उद्देश्य केवल एआई प्रणालियों को बेहतर बनाना है, न कि निगरानी करना।

सरकार ऊर्जा संकट के बीच अब इलेक्ट्रिक बस-ट्रकों को बढ़ावा देने की तैयारी में

1 अरब डॉलर की प्रोत्साहन योजना पर विचार कर रहा केंद्र

नई दिल्ली ।

भारत सरकार ऊर्जा संकट के बीच प्राइवेट सेक्टर में इलेक्ट्रिक बसों और ट्रकों को बढ़ावा देने के लिए 1 अरब डॉलर यानी करीब 8,300 करोड़ रुपए से ज्यादा की प्रोत्साहन योजना पर विचार कर रही है। इस योजना का मकसद कॉर्पोरेट परिवहन क्षेत्र में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना है। एक रिपोर्ट के मुताबिक नाम न छापने की शर्त पर मामले से जुड़े लोगों ने बताया कि यह प्रोग्राम 10 सालों तक चलेगा और मुख्य रूप से भारत के प्राइवेट ओन्ड कॉर्पोरेट पलीटो को टारगेट करेगा। इसमें सबसे बड़ा हिस्सा इंटर-सिटी बस ऑपरेटरों के लिए रखा जा सकता है। योजना को अंतिम रूप देने के लिए इस महीने प्रधानमंत्री कार्यालय और इंडस्ट्री से जुड़े पक्षों के साथ बैठकें हो सकती हैं। अंतिम बजट आवंटन, प्रोत्साहन पाने वाले वाहनों की श्रेणी और सस्बिडी ढांचे पर अभी काम चल रहा है और इसमें बदलाव संभव है। रिपोर्ट के मुताबिक पश्चिम एशिया संकट के कारण ऊर्जा आपूर्ति में आई बाधाओं के बाद भारत सरकार पेट्रोल, डीजल आदि



पर निर्भरता घटाने की कोशिश कर रही है। इससे ऊर्जा सुरक्षा और आयातित महंगाई को लेकर चिंताएं फिर बढ़ गई हैं। भारत अपनी करीब 90 फीसदी कच्चे तेल की जरूरत आयात के जरिए पूरी करता है, जिससे वह वैश्विक भू-राजनीतिक संकट और कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बना रहता है। कमर्शियल ट्रांसपोर्ट का इलेक्ट्रिफिकेशन भारत में बढ़ते वायु प्रदूषण को कम करने में भी मदद करेगा। इंटरनेशनल कार्डिअल ऑन क्लीन ट्रांसपोर्टेशन के मुताबिक नई दिल्ली जैसे शहरों में वाहनों से होने वाला उत्सर्जन सालाना सूक्ष्म कण प्रदूषण का लगभग 40 फीसदी तक योगदान देता है। पिछले पांच सालों में इलेक्ट्रिक बसों को अपनाने की

रफ्तार तेजी से बढ़ी है, जिसमें सरकारी परिवहन कंपनियों की बड़ी भूमिका रही है। हालांकि भारत में अभी भी ज्यादातर नई बसें डीजल से चलती हैं। हालांकि डीजल पर निर्भरता केवल भारत की समस्या नहीं है, चीन, अमेरिका और यूरोप जैसे क्षेत्र कमर्शियल वाहनों के इलेक्ट्रिफिकेशन में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। चीन में पहले से ही लाखों इलेक्ट्रिक ट्रक और बसें चल रही हैं, जबकि अमेरिका और यूरोप शहरी लॉजिस्टिक्स और पब्लिक ट्रांसपोर्ट पलीटो को तेजी से इलेक्ट्रिक बना रहे हैं। अनुमानों के मुताबिक भारत में 20 लाख से ज्यादा बसें हैं, लेकिन इनमें से केवल 5 फीसदी बसों पर सरकार का नियंत्रण है। वहीं देश में करीब सभी ट्रक निजी क्षेत्र द्वारा संचालित

किए जाते हैं और यही डीजल की सबसे बड़ी खपत करते हैं। उन्होंने बताया कि अधिकारी छोटे कमर्शियल पलीट ऑपरेटरों को इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के उपायों पर विचार कर रहे हैं। ये ऑपरेटर ऊंची शुरुआती लागत और सीमित वित्तपोषण के कारण कठिनाई का सामना कर रहे हैं। विचारार्थीन प्रोत्साहनों में वाहन की पूरी अवधि में प्रति वाहन 15 लाख रुपए तक का ब्याज सब्सिडी लाभ शामिल हो सकता है, जिसे समय के साथ धीरे-धीरे कम किया जाएगा। सरकार प्राइवेट कंपनियों को इलेक्ट्रिक कमर्शियल वाहन खरीदने के लिए वित्तपोषण उपलब्ध कराने के लिए आंशिक क्रेडिट गारंटी व्यवस्था पर भी विचार कर रही है।

कर्मचारियों पर कम खर्च और ब्याज में आई कमी का कंपनियों को मिला फायदा

नई दिल्ली ।

वित्त वर्ष 2025-26 की चौथी तिमाही में कंपनियों का मुनाफा मार्जिन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। कर्मचारियों पर कम खर्च और ब्याज के बोझ में आई कमी का कंपनियों को फायदा मिला। कम वेतन और पारिश्रमिक के साथ-साथ ब्याज लागत में हुई बचत ने कच्चे माल की बढ़ी लागत को काफी हद तक पाट दिया है। इससे वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में कंपनियों का कर बाद मुनाफा मार्जिन 11.3 फीसदी रहा जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में 60 आधार अंक ज्यादा है और कम से कम पिछली 21 तिमाहियों में सबसे ज्यादा मुनाफा मार्जिन है। वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही के 10.6 फीसदी मुनाफा मार्जिन से चौथी तिमाही में 70 आधार अंक की बढ़ोतरी हुई। वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में कंपनियों का मुनाफा मार्जिन पिछले पांच सालों में करीब एक तिहाई बढ़ा है। मार्च 2021 तिमाही में यह 8.6 फीसदी था। 837 कंपनियों का वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में कुल शुद्ध लाभ 15.5 फीसदी बढ़ा है जबकि इस दौरान उनकी आय में 9.5 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इन कंपनियों का कुल समायोजित शुद्ध लाभ वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में करीब 3.24 लाख करोड़ रहा जो वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में 2.81 लाख करोड़ रुपए था। दूसरी ओर इन कंपनियों की कुल आय वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में बढ़कर लगभग 28.65 लाख करोड़ रुपए रही जो वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में 26.16 लाख करोड़ रुपए और वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही में 27.71 लाख करोड़ रुपए थी। रिपोर्ट के मुताबिक चौथी तिमाही में वेतन और पारिश्रमिक और ब्याज व्यय जैसे प्रमुख खर्च में वृद्धि धीमी रही जिससे कंपनियों को मुनाफा मार्जिन बढ़ाने में मदद मिली है। वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में नमूने में शामिल कंपनियों की कुल वेतन वृद्धि 6.4 फीसदी रही जबकि बिक्री एवं मार्केटिंग खर्च में 3.6 फीसदी का इजाफा हुआ। हालांकि कंपनियों की लाभप्रदता को सबसे बड़ा फायदा कम ब्याज लागत का मिला। इस लाभ में बैंकों और गैर-बैंक ऋणदाताओं का दबदबा रहा और इनकी हिस्सेदारी नमूने में शामिल कंपनियों के कुल शुद्ध लाभ की करीब 43 फीसदी रही। बैंक, वित्त और बीमा कंपनियों को कम ब्याज दरों से सबसे ज्यादा लाभ हुआ और वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में उनके कुल ब्याज खर्च में केवल 2.2 फीसदी की बढ़ोतरी हुई।

वायु सुरक्षा अधिकारी ‘फ्यूल-कंट्रोल स्विच पैनेल’ के परीक्षण की करेंगे निगरानी

लंदन-बेंगलूर उड़ान के पायलटों ने इसमें खराबी की बात कही थी

नई दिल्ली ।

भारतीय वायु सुरक्षा अधिकारी सिपएल जाने की योजना बना रहे हैं। वहां वे बोइंग द्वारा किए जा रहे एक 'फ्यूल-कंट्रोल स्विच पैनेल' के परीक्षण की निगरानी करेंगे। इस पैनेल को फरवरी में एयर इंडिया के एक 787 विमान से हटा दिया गया था, जब लंदन-बेंगलूर उड़ान के पायलटों ने इसमें खराबी की बात कही थी। यह जानकारी दस्तावेज से पता चली है। भारतीय अधिकारियों ने इस परीक्षण को 'संवेदनशील' बताया है। इस परीक्षण ने बोइंग डूमलाइनर में लगे उन स्विचों पर फिर से ध्यान केंद्रित कर दिया है, जो विमान के इंजनों में जेट ईंधन का प्रवाह नियंत्रित करते हैं। यह ऐसे समय में हो रहा है जब जांचकर्ता पिछले जून में गुजरात में हुए एयर इंडिया 787 विमान हादसे की अंतिम रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। इस हादसे में 260 लोगों की जान चली गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक ये स्विच इस तरह से डिजाइन किए गए हैं कि अगर पायलट कोई विशेष एक्शन नहीं लेते हैं तो इन्हें हिलाया नहीं जा सकता, लेकिन इस हादसे की शुरुआती रिपोर्ट में यह सामने आने के बाद कि ये स्विच करीब एक ही समय पर बंद हो गए थे और जिससे इंजनों की ईंधन मिलना बंद हो गया था, ये स्विच अब जांच के दायरे में आ गए हैं। डीजीसीए ने पहले बताया था कि लंदन में फरवरी में हुई घटना के दौरान पायलटों ने इंजन चालू करते समय देखा कि पहले दो प्रयासों में जब हल्का दबाव डाला गया, तो फ्यूल स्विच 'रन' स्थिति में स्थिर नहीं रहे, लेकिन उड़ान भरने से पहले तीसरे प्रयास में वे स्थिर हो गए। एयर इंडिया ने कहा कि अतिरिक्त परीक्षण में एक नियंत्रित प्रयोगशाला परिवेश में जांच शामिल है, ताकि इसके प्रदर्शन की निश्चित रूप से पुष्टि हो सके।

निवेश के लिए खरीदा फिजिकल गोल्ड सबसे महंगा और घाटे वाला विकल्प

आज भी भारत के घरों में करीब पच्चीस हजार टन सोना पड़ा है

नई दिल्ली ।

भारतीय समाज और सोने का रिश्ता सदियों पुराना है। त्योहारों की रौनक हो या शादियों का उल्लास, सोना हर मोड़ पर भारतीय परिवारों के सुख-दुख का साथी रहा है। एक अनुमान के मुताबिक आज भी भारत के घरों में करीब पच्चीस हजार टन सोना पड़ा है, जो काफी हद तक निष्क्रिय है, अलमारियों में बंद है और जिसकी देश भर में कोई एक तय कीमत भी नहीं है, लेकिन बदलते समय के साथ सोने के बाजार की यह पूरी तस्वीर अब बदल रही है। साल 2024 से सरकार ने नए सॉवरैन गोल्ड बॉन्ड (एसजीबी) को जारी करना पूरी तरह बंद कर दिया था, जिसके बाद बजट 2026 के नए नियमों ने इसके टैक्स फायदों को भी सीमित कर दिया। दूसरी तरफ नवंबर 2025 में सेबी ने मोबाइल ऐप्स पर मिलने वाले अनरगुलेटेड डिजिटल गोल्ड को लेकर कड़ी चेतावनी जारी की थी। रिपोर्ट के मुताबिक इस बदलते सिस्टम के बीच नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के 'इलेक्ट्रॉनिक गोल्ड रिसीट्स' (ईजीआर) ने निवेश की दुनिया में कदम रखा। अब देश के आम निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि सोने में निवेश का सबसे व्यावहारिक, सुनिश्चित और किफायती रास्ता कौन सा है। क्या हमें सुनार की दुकान से पारंपरिक सोना खरीदना चाहिए, सालों से चल रहे गोल्ड ईटीएफ में बने रहना चाहिए या फिर नए ईजीआर को अपनाना चाहिए। पारंपरिक रूप से भारत में सोने की खरीद हमेशा से आप्रभूणों या सिक्कों के रूप में की जाती रही है, जिसे हम फिजिकल गोल्ड कहते हैं। सुनार की दुकान पर जाकर अपनी आंखों के सामने सोने को देखना और उसे छूकर महसूस करना हमेशा से भारतीयों की पसंद रही है। हंसा रिसर्च ग्रुप प्राइवेट लिमिटेड की एंजीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट इस उपभोक्ता व्यवहार की गहराई को समझते हुए कहती हैं कि भारत में गहनों और सोने का अपना एक सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व है, क्योंकि यह लोगों को 'टैन्जिबल ओनरशिप' यानी संपत्ति को छूकर महसूस करने और खुद के पास सुनिश्चित रखने की वास्तविक खुशी देता है। यही कारण है कि भारतीय परिवारों में इसकी मांग हमेशा बनी रहेगी।



उन्होंने कहा कि अगर आप इसे सिर्फ निवेश के नजरिए से देखें, तो फिजिकल गोल्ड सबसे महंगा और घाटे वाला विकल्प साबित होता है। सोना खरीदते ही सबसे पहले आपको 3फीसदी जीएसटी देना पड़ता है। इसके अलावा ज्वेलर्स 5फीसदी से लेकर 20फीसदी या उससे भी ज्यादा तक मेकिंग चार्ज वसूल लेते हैं, जिसका निवेश से कोई फायदा नहीं होता। फिर इसकी सुरक्षा की चिंता अलग रहती है। या तो घर में चोरी का डर बना रहता है, या बैंक लॉकर के लिए हर साल मोटा किराया देना पड़ता है। सबसे बड़ा झटका तब लगता है जब आप सोना बेचने जाते हैं। उस समय ज्वेलर्स पुराने मेकिंग चार्ज का पैसा तो वापस नहीं देते, ऊपर से शुद्धता जांचने के नाम पर सोने के वजन या कीमत में भी कटौती कर लेते हैं।



बजट में ट्रिप प्लान करने के लिए जरूरी है कि आप सही लोकेशन का चुनाव करें

सिंगल मदर्स के लिए बच्चे की परवरिश करना आसान नहीं होता है। क्योंकि उनकी जिंदगी में ऐसी कई परेशानियां आती हैं, जिन्हें वह अकेले मैनेज करती हैं। लेकिन सिंगल मदर्स अपने बच्चे को हर खुशी देने की कोशिश करती हैं। इस समय गमी की छुट्टियां चल रही हैं और बच्चे घूमने जाने की जिद करते हैं। ऐसे में मां अपने बच्चे के लिए भी ट्रिप प्लान करती हैं। लेकिन सवाल यह है कि वह कम बजट में ट्रिप कैसे प्लान करें। क्योंकि उन्हें अकेले ही घर और बाहर सब मैनेज करना होता है। वहीं अगर आप भी सिंगल मदर हैं और बजट में ट्रिप प्लान करने में परेशान हो रही हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे हैक्स बताते जा रहे हैं,

जिनको फॉलो करके आप सिर्फ 10 हजार रुपए में घूमने का प्लान बना सकती हैं।

ऐसे प्लान करें ट्रिप

बजट में ट्रिप प्लान करने के लिए जरूरी है कि आप सही लोकेशन का चुनाव करें। क्योंकि सही लोकेशन आपके बजट को कम करती है। भले ही आप इन जगहों पर घूम चुकी हों, लेकिन बच्चे के लिए आप किसी सस्ती जगह का चुनाव कर सकती हैं।

वहीं सिंगल मदर्स को ऐसी जगह का चुनाव करना चाहिए, जहां पर अच्छी सुविधा और सुरक्षा के लिहाज से भी ठीक हो। जहां पर सस्ते ऑटो या कैब आदि आसानी से मिल सकें। जैसे पहाड़ों वाली जगह पर हर

चीज का दाम अधिक रहता है। इन जगहों पर खाने-पीने से लेकर स्टे तक के साधन काफी महंगे होते हैं।

वहीं आपको अपने साथ कुछ खाने पीने की ऐसी चीजें रखनी चाहिए, जो जल्दी खराब न हों। ट्रिप के दौरान आप साथ में फल लेकर जा सकती हैं। इससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और जल्दी भूख भी नहीं लगेगी।

बजट में घूमने के लिहाज से दूर पैकेज बेस्ट ऑप्शन होते हैं

सही लोकेशन का चुनाव करने पर आपको होटल भी कम दाम में मिल जाते हैं और यहां पर पहुंचना भी आसान होता है।

अधिकतर सिंगल मदर्स शहर से बाहर नहीं जाना चाहती हैं, तो आप शहर में रहकर भी घूमने जाने का प्लान बना सकती हैं। आप शहर में बच्चे को ऐसी जगह घुमाएं, जहां पर बच्चे हमेशा से जाना चाहते थे। ऐसा करने से न सिर्फ ट्रेवल और होटल का खर्चा बचेगा, बल्कि शहर में रहकर बच्चे अपनी पसंदीदा जगह घूम सकेंगे।

दूसरे शहर में कम खर्च के लिहाज से आप शेयरिंग के साधन से घूम सकती हैं। क्योंकि इसमें कम बजट होता है। वहीं बच्चों के साथ घूमने के लिए यह टिप्स आपकी यात्रा को आसान बना देगी।



देहरादून में करना चाहते कुछ तूफानी तो जरूर एक्सप्लोर करें ये जगहें, जमकर कर सकेंगे मस्ती

देहरादून एक ऐसी जगह है, जहां पर आपको खूबसूरत हिल स्टेशन मिलेंगे। यहां से हरिद्वार, ऋषिकेश, मसूरी और धनोल्दी जैसी कई जगहों पर आप जा सकते हैं। वहीं अगर आप देहरादून में कुछ रोमांचक अनुभव करना चाहते हैं। वहीं कुछ देहरादून में ऐसी जगहों की तलाश करना चाहते हैं, जहां पर कुछ अच्छी एक्टिविटी कर सकें। अगर आप भी देहरादून में कुछ तूफानी करना चाहते हैं, तो आपको आसपास के हिल स्टेशन पर घूमने जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको देहरादून की कुछ खूबसूरत जगहों के बारे में बताते जा रहे हैं।

रॉबर्स केव देहरादून देहरादून की यह आपको काफी रोमांचक लगेगी। क्योंकि इसकी बनावट लोगों को



आकर्षित करती है। जिन लोगों ने

पहले कभी गुफा वाली जगहों पर प्रवेश नहीं किया है, उनके लिए यह एडवेंचर्स साबित हो सकता है। क्योंकि यहां पर आपको पैदल जाना होगा। पैरों में पानी होता है और मछलियां आपके पैरों को छूती हैं। हालांकि शुरुआत में आपको गुफा में चलने में थोड़ा डर लग सकता है, लेकिन धीरे-धीरे अंदर जाते ही नॉर्मल लगने लगेगा। प्रयास करें कि आप सुबह-सुबह पहुंचें, क्योंकि यहां पर बहुत भीड़ लगती है। यह मसूरी के पास घूमने लायक अच्छी जगहों में से एक है।

रॉक क्लाइंबिंग अगर आप कुछ तूफानी करना चाहते हैं और बिना किसी सहारे के पेड़ पर चढ़ना चाहते हैं। तो आपको देहरादून में रॉक क्लाइंबिंग का लुत्फ उठा सकते हैं। यह सालन गांव में रॉक क्लाइंबिंग करवाई जाती है। जहां पर आपको

हर दिन भीड़ देखने को मिलेगी। आप यहां पर कैपिंग के साथ कई तरह की एक्टिविटी भी कर सकते हैं। वहीं आप यहां पर पैकेज भी बुक कर सकते हैं और पूरा रात टेंट में बिता सकते हैं। इस दौरान आपको मिट्टी के बर्तन में खाना बनाना होगा और पूरी लाइफ कैप की तरह जीना होगा। यह आपके लिए एक रोमांचक अनुभव हो सकता है।

मालसी डियर पार्क अगर आप देहरादून में कुछ रोमांचक करना चाहते हैं, तो मालसी डियर पार्क जा सकते हैं। क्योंकि यह जगह आपको निराश नहीं करेगी। आप यहां पर जिप लाइनिंग और तरह-तरह की एक्टिविटी भी कर सकेंगे। बच्चों को भी यहां पर एक्टिविटी करवाई जाती है। वहीं अगर आप छोटा ट्रिप प्लान कर रही हैं, तो आपको यहां पर आपको भूलकर भी नहीं जाना चाहिए। यह देहरादून के पास घूमने वाली बेस्ट जगहों में से एक है।

भीड़ से दूर बेहद शांत है उत्तराखंड का ये हिल स्टेशन, जन्मत में आने का होगा एहसास

समर वेकेशन में हजारों लोग घूमने-फिरने के लिए निकल गए हैं। तो वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने अभी तक कोई ट्रिप प्लान नहीं कर पाए हैं। वह किसी पहाड़ी जगह पर घूमने जाना चाहते हैं, लेकिन लोकेशन नहीं ढूंढ पा रहे हैं। वहीं कुछ लोग ऋषिकेश-नैनीताल नहीं जाना चाहते हैं, क्योंकि इन जगहों पर समर वेकेशन में यहां पर पर्यटकों की अधिक भीड़ आती है। इसलिए अगर आप किसी ऐसी जगह की तलाश कर रहे हैं, जो नैनीताल और ऋषिकेश से भी अधिक सुंदर हो। तो आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको उत्तराखंड की एक सबसे खूबसूरत जगह के बारे में बताते जा रहे हैं।

मुनस्वारी – अगर आप भी दिल्ली की गर्मी से परेशान होकर अपने परिवार के साथ उत्तराखंड में अच्छी जगह ढूंढ रहे हैं। तो फौरन आपको मुनस्वारी का ट्रिप प्लान करें। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, ट्रेकिंग और ऊंचे पहाड़ों के लिए जाना जाता है। मुनस्वारी में गर्मियों में आपको अधिक भीड़ नहीं मिलने वाली है। क्योंकि मुनस्वारी काफी ऊंचाई पर स्थित है। नैनीताल से मुनस्वारी पहुंचने में आपको करीब 11 से 12 घंटे का समय लगता है। वहीं ऋषिकेश से भी यहां तक पहुंचने में करीब इतना ही समय लगेगा। यह मसूरी के पास घूमने के लिहाज से काफी अच्छी जगह है।

ऐसे पहुंचें मुनस्वारी

अगर आप दिल्ली से यात्रा करने का प्लान बना रहे हैं, तो बस से यात्रा करने के लिए अच्छा है। हालांकि इसमें ज्यादा समय लग सकता है।

अगर आप चाहें तो दिल्ली से देहरादून के लिए ट्रेन ले सकते हैं। फिर मुनस्वारी के लिए बस ले सकते हैं।

इसके साथ ही मुनस्वारी के लिए कैब की सुविधा भी मौजूद है। लेकिन इसमें खर्च ज्यादा होता है। वहीं अगर आप बजट में यात्रा करने का प्लान बना रहे हैं, तो बस से यात्रा करें। आने-जाने में असुविधा न हो इसके लिए पहले से बस की बुकिंग कर लें। क्योंकि अधिक भीड़ होने पर आपको बस में सीट मिलने में मुश्किल हो सकती है।

दिल्ली से मुनस्वारी की दूरी करीब 604 किमी है। यहां पर पहुंचने में आपको 13-14 घंटे का समय लग सकता है।

प्रयास करें कि आप रात में बस ले लें। जिससे कि सुबह मुनस्वारी में ही आंख खोलें। इससे आपका सफर आराम से सोकर बीतेगा।

मुनस्वारी परिवार के साथ घूमने के लिहाज से काफी अच्छी जगह है।

प्रकृति, शांति और रोमांच का संगम है पार्वती घाटी में बसा कसोल

हिमाचल प्रदेश की पार्वती घाटी में बसा कसोल एक छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत पर्यटन स्थल है, जो खासकर युवाओं, ट्रेकिंग प्रेमियों और विदेशी पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। समुद्र तल से लगभग 1,580 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कसोल को फ़भरत का मिनी इजराइल फ़ भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ बड़ी संख्या में इजराइली पर्यटक आते हैं और यहाँ की संस्कृति में उनका प्रभाव देखा जा सकता है।

कसोल की खासियत कसोल एक शांत और सुरम्य गाँव है, जो पार्वती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ का वातावरण बेहद शांत, स्वच्छ और ठंडा होता है। ऊँचे पहाड़, घने देवदार के जंगल, कलकल बहती पार्वती नदी और रंग-बिरंगे कैफ़े इस स्थान को बेहद आकर्षक बनाते हैं।



प्रमुख आकर्षण

1. पार्वती नदी

यह तेज बहाव वाली नदी कसोल की जान मानी जाती है। इसके किनारे टहलना, चट्टानों पर बैठकर मन को शांति देना और फोटोग्राफी करना पर्यटकों को बहुत पसंद आता है।

2. तोश और मणिकरण

कसोल से थोड़ी दूरी पर स्थित ये गाँव अपने प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं। मणिकरण में गर्म पानी के झरने और गुरुद्वारा प्रमुख आकर्षण हैं, जबकि तोश ट्रेकिंग प्रेमियों का पसंदीदा गाँव है।

3. चालल गाँव

कसोल से लगभग 30 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित यह छोटा गाँव ट्रेकिंग और कैम्पिंग के लिए आदर्श है। यहाँ आप स्थानीय संस्कृति को करीब से जान सकते हैं।

4. इजराइली कैफ़े और भोजन

कसोल में कई इजराइली कैफ़े और रेस्तराँ हैं जहाँ आप फलाफल, शाकशूका, हुम्मस आदि विदेशी व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं।

कसोल में करने योग्य गतिविधियाँ

ट्रेकिंग (खीरगंगा, तोश, चालल, ग्रहन)
कैम्पिंग और बोनफायर
रिवर साइड कैफ़े में समय बिताना
स्थानीय लोगों से मिलकर पहाड़ी संस्कृति को समझना

हर्बल चाय और हिमाचली हस्तशिल्प की खरीदारी

यात्रा का उत्तम समय
मार्च से जून- गर्मियों में ठंडी जलवायु और ट्रेकिंग के लिए अनुकूल मौसम।

सितंबर से नवंबर- मानसून के बाद की हरियाली और साफ़ आसमान।
दिसंबर से फरवरी- बर्फबारी का आनंद लेने के लिए उत्तम।

कैसे पहुँचे कसोल?
हवाई मार्ग निकटतम हवाई अड्डा भुंथर (कुल्लू) है, जो कसोल से लगभग 31 किमी दूर है।

रेल मार्ग निकटतम रेलवे स्टेशन जोगिंदरनगर है, लेकिन सड़क मार्ग से पहुँचना अधिक सुविधाजनक है।

सड़क मार्ग दिल्ली, चंडीगढ़ और मनाली से कसोल तक नियमित बस और टैक्सी सेवाएं उपलब्ध हैं।

कसोल एक ऐसा गंतव्य है जहाँ आप भीड़भाड़ से दूर प्रकृति के साथ एक गहरा रिश्ता बना सकते हैं। यहाँ का शांत वातावरण, रोमांचक ट्रेक्स, विदेशी भोजन और पहाड़ी सौंदर्य, हर पर्यटक को मंत्रमुग्ध कर देता है। चाहे आप सोलो ट्रेवलर हों, कपल या दोस्तों के साथ – कसोल हर किसी के लिए एक यादगार अनुभव है।



पलक तिवारी ने अपनी मां श्वेता तिवारी के साथ बॉन्ड को लेकर खुलकर बात की

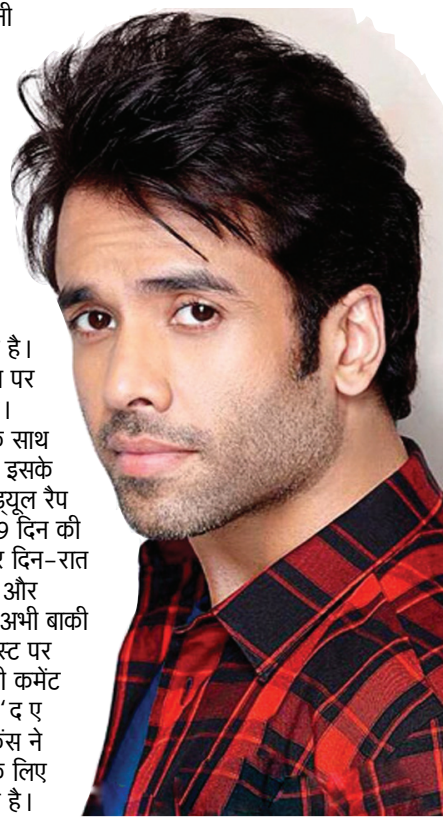
बॉलीवुड एक्ट्रेस पलक तिवारी लगातार अपने करियर को लेकर चर्चा में रहती हैं। इन दिनों वह अपनी वेब सीरीज 'लुखे' को लेकर चर्चा में हैं। इस बीच बातचीत में उन्होंने अपनी मां और टीवी की मशहूर अभिनेत्री श्वेता तिवारी के साथ बॉन्ड को लेकर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि मां ने उनके करियर में कभी भी दखल नहीं दिया। उन्होंने जो भी अब तक फैसले लिए हैं, खुद और दिल से लिए हैं। पलक तिवारी ने कहा, 'मेरी और मेरी मां की जिंदगी पूरी तरह अलग दौर और अनुभवों से गुजरी है, जिसके चलते हम दोनों के सोचने का तरीका अलग है। कहानियों को समझने का नजरिया भी अलग है। एक कलाकार के तौर पर हर व्यक्ति का अपना एक अलग सफर होता है, और उसी सफर के अनुभव उसके फैसलों को प्रभावित करते हैं। मेरी मां ने जिस समय और माहौल में काम किया, वह आज के समय से बहुत अलग था, इसलिए हम दोनों के दृष्टिकोण भी अलग हैं।'

पलक ने कहा, 'मेरी मां कभी भी मेरे करियर में दखल नहीं देतीं। वह सिर्फ मार्गदर्शन करती हैं, लेकिन किसी भी तरह का दबाव नहीं डालतीं। उन्होंने हमेशा से मुझे स्वतंत्र रूप से सोचने और फैसले लेने के लिए प्रेरित किया है। उनका मानना है कि कलाकार को अपने फैसले खुद लेने चाहिए, क्योंकि वही उसके करियर को सही दिशा देते हैं।' इंटरव्यू के दौरान पलक ने बताया, 'मां हमेशा मुझे यह सलाह दी है कि मैं अपने दिल की आवाज को सुनूं। एक कलाकार के लिए सबसे जरूरी चीज यही है कि वह अपने काम से भावनात्मक रूप से जुड़ा हो। अगर कहानी या किरदार अंदर से महसूस नहीं होता, तो उसे करना सिर्फ एक काम बनकर रह जाता है, जबकि अभिनय का असली मजा तभी आता है, जब वह दिल से जुड़ा हो।'



'गोलमाल 5' को लेकर तुषार कपूर ने दी बड़ी अपडेट

एक्टर तुषार कपूर अपनी अपकमिंग फिल्म 'गोलमाल 5' को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में उन्होंने सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर एक बड़ी अपडेट दी है। तुषार कपूर ने अपनी टीम के साथ एक सेल्फी शेयर की। इसके साथ उन्होंने एक पोस्ट लिखी है। तुषार कपूर ने इंस्टाग्राम पर एक सेल्फी शेयर की है। इसमें वह अपनी टीम के साथ नजर आ रहे हैं। उन्होंने इसके कैप्शन में लिखा है 'शेड्यूल रेप सेल्फी। गोलमाल 5, 79 दिन की कड़ी मेहनत, जुनून और दिन-रात शूटिंग, नींद की झपकी और छुट्टियां। लेकिन पिक्चर अभी बाकी है।' तुषार कपूर की पोस्ट पर अभिनेता आफताब ने भी कमेंट किया है। उन्होंने लिखा 'द ए टीम'। पोस्ट पर कई फैस ने कमेंट करके सीविल के लिए अपनी बेसब्री जाहिर की है।



मीरा नायर की 'अमरी' में नजर आएंगी प्रियंका चोपड़ा पिता के रोल में जयदीप अहलावत

डॉक्यूमेंट्री फिल्मों से अपने निर्देशन करियर की शुरुआत करने वाली मीरा नायर अब एक नई फिल्म लेकर आ रही हैं। इस फिल्म का नाम है 'अमरी'। इस फिल्म में प्रियंका चोपड़ा और जयदीप अहलावत के अलावा भी कई कलाकाल महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे।

'अमरी' स्टार कास्ट

मीरा नायर की नई फिल्म 'अमरी' में मुख्य भूमिका में अंजलि शिवरामन अमृता शेर-गिल का किरदार निभाएंगी। एमिली वॉटसन उनकी मां मैरी-एंटोनेट का रोल करेंगी। जयदीप अहलावत उनके पिता उमराव सिंह शेर-गिल के किरदार में नजर आएंगे। क्रिस्टियन साकवारी विक्टर ईगन के रूप में नजर आएंगी। अंजना वासन इंदिरा शेर-गिल के रूप में और जिम सरभ कार्ल खंडालावाला के रूप में नजर आएंगे। इन सभी के अलावा प्रियंका चोपड़ा मैडम अजूरी के रोल में नजर आएंगी। प्रियंका चोपड़ा इस फिल्म की एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर भी हैं। मीरा ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर अपनी नई फिल्म 'अमरी' का पहला लुक जारी किया है।

'अमरी' को लेकर मीरा नायर की राय

अमृता शेर-गिल की कला ने मीरा नायर को बहुत प्रभावित किया है। मीरा ने कहा, 'अमरी' अमृता



शेर-गिल की कला से प्रेरित है। उन्होंने यूरोप में अच्छी ट्रेनिंग ली और फिर भारत की आत्मा को अपनी पेंटिंग में उतारा। उनके रंगों की हिम्मत और आम लोगों को चित्रित करने का तरीका मुझे हमेशा प्रभावित करता रहा है।'

अमृता शेर-गिल की पेंटिंग्स

2027 में अमृता शेर-गिल की पेंटिंग्स की बड़ी प्रदर्शनी दुनिया भर में लगाई जाएगी। ये पेरिस से शुरू होकर लॉस एंजिल्स, दोहा होते हुए नई दिल्ली में खत्म होंगी। दिल्ली में उनकी स्थायी प्रदर्शनी भी लगाने की योजना है।

कान फिल्म फेस्टिवल में रिलीज हुआ वामिका गब्बी की 'डीसी' का ट्रेलर

वामिका गब्बी मौजूदा वक्त में इंडस्ट्री की सबसे व्यस्त अभिनेत्रियों में से एक हैं। पिछले महीने 'भूत बंगला' की सफलता के बाद कल ही उनकी नई फिल्म 'पति पत्नी और वो दो' रिलीज हुई है। अब उनकी आगामी फिल्म 'डीसी' रिलीज को तैयार है। फिल्म का ट्रेलर 79वें कान फिल्म फेस्टिवल में जारी किया गया है। 'डीसी' से निर्देशक से एक्टर बने लोकेश कनगराज अपना एक्टिंग डेब्यू कर रहे हैं। 3 मिनट 13 सेकंड के इस ट्रेलर में लोकेश कनगराज को देवदास और वामिका को चंद्रा के रूप में दिखाया गया है। ट्रेलर में दिखाया जाता है कि चंद्रा के माता-पिता ने कोलकाता में उसे कई साल पहले अवैध रूप से देह व्यापार में बेच दिया था। अब उसके पास रहने की कोई जगह नहीं है। जल्द ही पता चलता है कि देवदास एक पुलिस वाले और डॉक्टर चंद्रा की हत्या के आरोप में वॉन्टेड है। इसके बाद ट्रेलर में जबरदस्त एक्शन, खूनखराबा, बम धमाके और गोलीबारी देखने को मिलती है। ट्रेलर में लोकेश के साथ-साथ वामिका भी कई मौकों पर एक्शन करती नजर आती हैं। ट्रेलर का अंत एक रोमांटिक अंश में होता है, जहां वामिका और लोकेश सूर्यास्त के समय एक पहाड़ी पर खड़े नजर आते हैं। ट्रेलर देखकर उत्साहित हुए फैस ट्रेलर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर भी चर्चा में आ गया। हालांकि, अधिकांश यूजर्स ट्रेलर में सबसे ज्यादा प्रभावित अनिरुद्ध के म्यूजिक से हुए हैं। जबकि कई यूजर्स ने ट्रेलर में वामिका और लोकेश की भी जमकर तारीफ की है।



आज भी समाज में लोगों को उनके सरनेम से जज किया जाता है

अभिनेत्री महेश्वरी अपनी आगामी वेब सीरीज 'सतरंगी: बदले का खेल' की रिलीज को लेकर तैयार हैं। अभिनेत्री का कहना है कि इस सीरीज में एक ऐसे उतर भारत की लोक कला 'लौंडा नाच' और जाति-आधारित भेदभाव जैसे गंभीर मुद्दों को भी उठाया है। अभिनेत्री ने आईएनएस के साथ बातचीत में बताया कि स्क्रिप्ट सुनते ही उन्होंने इसके लिए तुरंत हामी भर दी थी। उन्होंने कहा, 'जब मैंने कहानी सुनी, तो मुझे लगा कि यह सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि एक सामाजिक संदेश देने का माध्यम भी है। उतर प्रदेश में पत्नी-बढ़ी होने के नाते मैंने अपने आस-पास ऐसी सच्चाइयों को देखा और सुना था। उस दुनिया का हिस्सा बनना मेरे लिए एक बहुत ही सार्थक मौका था। मेरे किरदार में भी कई इमोशनल परतें हैं और एक एक्टर के लिए, ऐसी जटिलता हमेशा रोमांचक होती है।' सीरीज के ट्रेलर से साफ पता चलता है कि इसकी कहानी बदले की नहीं, बल्कि पहचान और आत्म-सम्मान की लड़ाई भी है। अभिनेत्री ने बताया कि आज भी समाज में काफी लोगों को उनके टाइटल से जज किया जाता है। जाति आधारित हिंसा आज भी हमारे आसपास देखने को मिलती है। हम सीरीज के माध्यम से बस यह दिखाना चाहते थे कि इंसान का जिन बातों पर बस नहीं होता, उनकी वजह से लोगों को किन मुश्किलों से गुजरना

पड़ता है। यह यकीनन पहचान और इंसान की लड़ाई है और मुझे उम्मीद है कि आखिर में समाज यह लड़ाई जीत जाएगा। महेश्वरी ने सीरीज में एक ऐसे प्रभावशाली और बाहुबली किरदार निभाया है, जो अपने ही परिवार द्वारा किए जा रहे अत्याचारों और जाति व्यवस्था के खिलाफ खड़ी होती है। अपने ग्रामीण किरदार को लेकर अभिनेत्री का कहना है कि उनके लिए यह मुश्किल नहीं था। उन्होंने कहा, 'सच कहूँ तो मुझे यह मुश्किल नहीं लगा, क्योंकि मैंने दोनों तरह की जिंदगी जी है। अगर 'प्यार पैसा प्रॉफिट' ने मेरे मुंबई वाले पहलू को दिखाया, तो 'सतरंगी' मेरे अलीगढ़ के जड़ों को दिखाती है।'

अभिनेत्री ने बताया कि यहां तक आना के लिए उन्होंने अनगिनत ऑडिशन दिए और कई रिजेक्शन झेले हैं। उन्होंने कहा, 'इस मुकाम तक पहुंचना ही अपने आप में मुश्किल था, क्योंकि आपको मौके मिलने से पहले अनगिनत ऑडिशन और रिजेक्शन का सामना करना पड़ता है। आप रिजेक्शन से सीखते हैं और धीरे-धीरे अपनी कला को समझते हैं। डिजिटल कटेंट के लिए एक्टिंग करना और जज्बाती तौर पर गंभीर किरदार निभाना, ये दो अलग-अलग दुनियाएं नहीं हैं। अगर आपको सच में एक्टिंग करनी आती है, तो यह बदलाव अपने आप ही हो जाता है।'



अपनी पहचान बनानी थी, दादा के नाम का सहारा नहीं लिया

दिवंगत म्यूजिक कंपोजर ओपी नरयार की पोती निहारिका रायजगदा साल 2010 में मिस यूके और फिर मिस इंडिया वर्ल्डवाइड रही। उनकी परवरिश लक्समबर्ग में हुई। उन्होंने मेडिकल साइंटिस्ट की पढ़ाई की है, पर 2013 से फिल्मी दुनिया में कदम रखे। उनकी पहली फिल्म बंगाली थी, जिसका नाम 'दामोदल' था। हालांकि, चर्चा उन्हें 'बेबी' और 'मसान' जैसी फिल्मों से मिली। साल 2025 में निहारिका फिल्म 'अदिका' में नजर आई और इस साल 'मर्सी' में नजर आई, जो अप्रैल में रिलीज हुई।

हर कलाकार से कुछ न कुछ सीखा

निहारिका रायजगदा अब तक 'मसान', 'बेबी', 'टोटल धमाल' और 'सूर्यवंशी' जैसी फिल्मों में

काम कर चुकी हैं। इन फिल्मों में बड़े सितारों के साथ काम करते हुए उन्होंने क्या सीखा? इसके जवाब में वह कहती हैं, 'मैंने हर कलाकार से कुछ न कुछ सीखा है। मसलन ओमपूरी जी इमोशनल आदमी थे, यहां तक कि इमोशंस से ही एक्टिंग करते थे, तो उनसे मैंने वह सीखा। रणवीर सिंह से मैंने सीखा कि इंसान को एक्टर बनने के लिए पेशनेट होना चाहिए। अक्षय (कुमार) सर सबसे बात करते हैं, बहुत बिदास इंसान हैं और बहुत अनुशासित भी हैं। वह न स्मोकिंग करते हैं और ना ही शराब पीते हैं। तो अनुशासन और शरीर को कैसे मेंटेन करना है, यह मैंने उनसे सीखा। अजय देवगन सर से बिजनेस करना, सिनेमा हॉल्स का बिजनेस चलाना, प्रोड्यूसर-डायरेक्टर बनना जैसी चीजें मैंने समझीं।'

आदिल जी कमाल के हैं

निहारिका इन दिनों फिल्म 'मर्सी' में अपने रोल को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में उनके साथ दिग्गज कलाकार आदिल हुसैन नजर आ रहे हैं। उनके साथ काम करने के अनुभव पर वह कहती हैं, 'आदिल जी से मैंने सीखा कि इतनी फिल्में करने के बाद भी आप विनम्र और साधारण कैसे बने रहें। उन्होंने 'इंग्लिश-विंग्लिश' और 'लाइफ ऑफ पाई' जैसी

सुपरहिट फिल्मों में काम किया है। लेकिन उन्हें देखकर पता लगता है कि इंसान जितना ज्यादा ऊपर पहुंचता है न, वह उतना ज्यादा सिंपल होता जाता है। वह फिलोसॉफर हैं, कई किताबें पढ़ चुके हैं। वह सेट पर अक्सर इम्प्रोवाइज करते थे और जिसे हम नैचुरल एक्टिंग कहते हैं, वह आदिल सर करते हैं। सच कहूँ तो वह कमाल के हैं।' फिल्म इंडस्ट्री में अक्सर नेपोटिज्म की बात होती है। लेकिन निहारिका को अभी तक वैसे मौके नहीं मिल पाए। आखिर क्यों उन्होंने अपने दादाजी के नाम का इस्तेमाल नहीं किया? इसके जवाब में निहारिका कहती हैं, 'क्योंकि किसी ने मुझे उसका इस्तेमाल करने नहीं दिया। हालांकि फिर भी मैंने बहुत अच्छे डायरेक्टर के साथ काम किया और मुझे अपने डायरेक्टर पर गर्व है। मैं तो इसे भी खुशकिस्मती मानती हूँ कि मैं इस इंडस्ट्री का हिस्सा हूँ, वरना बहुत लोग फिल्मों में काम करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें वह नसीब नहीं होता। हालांकि फिल्मी फैमिली से होने का फायदा कहीं न कहीं मिलता ही है। लेकिन उसका जो पोटेंशियल है, वह मेरे भी फायदे में नहीं आया।' वह आगे बताती हैं, 'मेरी शुरुआत दरअसल खुद की वजह से हुई थी क्योंकि मैं मिस इंडिया रह चुकी थी। मैंने ऑडिशन दिया और मुझे मौका मिल गया। लेकिन

'टोटल धमाल' मुझे जरूर फैमिली बैकग्राउंड की वजह से मिली थी। शुरू में मैं किसी को बताती ही नहीं थी कि मैं फिल्मी फैमिली से हूँ क्योंकि मुझे अपनी पहचान खुद बनानी थी। मैं चाहती हूँ कि मैं अपने परिचय से पहचानी जाऊँ न कि अपने परिवार के जरिए।'

इच्छामृत्यु पर फैसला सावधानी और समझदारी से हो

निहारिका फिल्म 'मर्सी' में नजर आ रही हैं तो वहीं कुछ समय पहले ही हरीश राणा की इच्छामृत्यु का केस काफी चर्चा में रहा। इस बारे में निहारिका क्या सोचती हैं? वह कहती हैं, 'मे इच्छामृत्यु को गलत नहीं मानती। लेकिन यह जरूर मानती हूँ कि एक व्यक्ति की हालत इतनी खराब है कि कोई और विकल्प नहीं है। तो जिस तरह हरीश राणा का खाना वगैरह विज्ञान किया गया, तो उस तरह सम्मान के साथ हमारा न्यायालय फैसला ले सकता है। लेकिन यह फैसला सभी पहलुओं को देखते हुए बेहद सावधानी और समझदारी से अथॉरिटीज द्वारा लिया जाना चाहिए।'

संक्षिप्त समाचार

ओपनएआई के खिलाफ एलन मस्क की बड़ी हार, कोर्ट ने खारिज किया मुकदमा

वॉशिंगटन, एजेंसी। दुनिया के सबसे अमीर इंसान एलन मस्क को अमेरिकी फेडरल कोर्ट से एक बहुत बड़ा झटका लगा है। कैलिफोर्निया के ऑकलैंड की एक झील के बाद अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाया। जूरी ने दो घंटे से भी कम समय तक विचार करने के बाद अदालत को बताया कि मस्क ने यह मुकदमा दायर करने में बहुत ज्यादा देर कर दी है और उन्होंने कानूनी समय सीमा (स्टैच्यूटी डेडलाइन) को पार कर लिया है। जज यवोन गॉजालेज रोजर्स ने सोमवार को जूरी के इस फैसले को अदालत के अंतिम फैसले के रूप में स्वीकार कर लिया और मस्क के दावों को खारिज कर दिया। हालांकि, मस्क के वकील स्टीवन मोलो ने स्पष्ट किया है कि यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। उन्होंने इस हार की तुलना अमेरिकी इतिहास की पुरानी जंगों से की और कहा कि वे इस फैसले के खिलाफ अदालत में अपील जरूर करेंगे।

गौतम अदाणी के खिलाफ अमेरिकी अदालत ने हटाए सभी आरोप, मामला स्थायी रूप से किया बंद

न्यूयॉर्क, एजेंसी। अमेरिकी न्याय विभाग ने भारतीय उद्योगपति गौतम अदाणी और उनके भतीजे सागर अदाणी के खिलाफ सभी आपराधिक आरोपों को स्थायी रूप से हटा दिया है। इसके साथ ही न्यूयॉर्क में चल रहा बहुवर्षीय रिश्तव और धोखाधड़ी के आरोपों का मामला पूरी तरह से बंद हो गया है। इस फैसले के बाद अदाणी समूह से जुड़ी कई अमेरिकी नियामक और कानूनी जांचें बंद हो गई हैं। पिछले सप्ताह अमेरिकी प्रतिभूति और विनिमय आयोग (एसईसी) ने भारत में सौर ऊर्जा परियोजनाओं के संबंध में निवेशकों को किए गए खुलासे से जुड़े गौतम अदाणी और सागर अदाणी के खिलाफ आरोपों का निपटारा किया। अदालत ने दायर दस्तावेजों से पता चला कि गौतम अदाणी ने 60 लाख अमेरिकी डॉलर और सागर अदाणी ने 120 लाख अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमति जताई, बिना किसी भी तरह की गलती स्वीकार किए या इनकार किए।

23 वर्षीय तुषार कुमार ने रचा इतिहास, ब्रिटेन में सबसे युवा भारतीय मूल के मेयर बने ; मिली बोरेहामवुड की कमान

लंदन, एजेंसी। भारतीय मूल के 23 वर्षीय तुषार कुमार ने ब्रिटेन में इतिहास रच दिया है। उन्हें आधिकारिक तौर पर एक्सट्री और बोरेहामवुड का मेयर नियुक्त किया गया है। वह ब्रिटेन के इतिहास में इस पद पर पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय मूल के व्यक्ति बन गए हैं। 13 मई को बोरेहामवुड के फेयरवे हॉल में आयोजित एक समारोह में उनकी नियुक्ति की पुष्टि हुई। तुषार कुमार ने लंदन के किंग्स कॉलेज से राजनीति विज्ञान की पढ़ाई की है। मेयर की जिम्मेदारी संपालने से पहले वह डिट्टी मेयर के रूप में काम कर रहे थे। वह लंबे समय से बोरेहामवुड में स्थानीय नागरिक और सामुदायिक कार्यों में सक्रिय रहे हैं। इस बड़ी उपलब्धि पर तुषार कुमार ने खुशी जाहिर की है। उन्होंने इसे एक बड़ा सम्मान बताया। तुषार ने कहा कि किंग्स कॉलेज में राजनीति विज्ञान पढ़ने से लेकर अपने पसंदीदा शहर का मेयर बनने तक का यह सफर उनके लिए किसी सपने जैसा है। उन्होंने अपने राजनीतिक सफर में मिले समर्थन के लिए सभी का आभार जताया। इसी दौरान तुषार ने निवर्तमान मेयर डैन ओजार्डों को उनकी मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि डिट्टी मेयर रहते हुए उन्हें डैन से बहुत कुछ सीखने को मिला। डैन ने पिछले एक साल में शहर की सेवा में जो योगदान दिया, तुषार ने उसकी भी सराहना की। आगामी नागरिक चुनाव के लिए लिखित को नया डिट्टी मेयर नियुक्त किया गया है। मेयर के रूप में तुषार कुमार का मुख्य लक्ष्य समुदाय के बीच अपनी मौजूदगी बढ़ाना है। वह स्थानीय चैरिटी संस्थाओं और संगठनों की मदद करना चाहते हैं। इसके साथ ही वह चाहते हैं कि अधिक से अधिक युवा सार्वजनिक सेवा और सामुदायिक जीवन में हिस्सा लें। तुषार ने संकल्प लिया कि वह समाज के बीच रहकर लोगों की समस्याओं को सुलझाने और युवाओं को प्रेरित करने का काम करेंगे।

इस्लामपुरा होगा कृष्ण नगर, मुस्ताफाबाद बनेगा धर्मपुरा, पाकिस्तान में बदलेंगे सड़कों के नाम

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान की पंजाब सरकार ने लाहौर की कई सड़कों और गलियों के आजादी से पहले के नाम को बहाल करने की योजना को मंजूरी दे दी है। एक अधिकारी ने सोमवार को बताया कि इसका उद्देश्य शहर की विभाजन-पूर्व विरासत को पुनर्जीवित करना है। पिछले कुछ दशकों में लाहौर की कई ऐतिहासिक सड़कों और गलियों के नाम बदल दिए गए। इसके तहत ब्रिटिशकालीन और हिंदू धर्म से जुड़े नामों को बदलकर इस्लामी, पाकिस्तानी या स्थानीय हस्तियों से जुड़े नये नाम रखे गए।

कैबिनेट बैठक में दी गई मंजूरी : पंजाब सरकार के एक अधिकारी ने पीटीआई-भाषा से कहा, 'कुछ दिन पहले मुख्यमंत्री मरियम नवाज की अध्यक्षता में हुई पंजाब कैबिनेट की बैठक में लाहौर और उसके आसपास के इलाकों की विभिन्न सड़कों और गलियों के मूल और ऐतिहासिक नामों को बहाल करने की योजना को मंजूरी

दी गई थी।' उन्होंने कहा कि यह निर्णय इस ऐतिहासिक शहर की सांस्कृतिक पहचान और विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए लिया गया है।

नवाज शरीफ कर रहे हैं अगुवाई : उन्होंने बताया कि इस पहल का नेतृत्व पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ कर रहे हैं, जो लाहौर विरासत क्षेत्र पुनरुद्धार परियोजना के प्रमुख भी हैं। उनके प्रस्ताव को पिछले सप्ताह कैबिनेट की मंजूरी मिल गई थी।

इन ऐतिहासिक स्थानों का नाम बदला गया था : लाहौर की ऐतिहासिक गलियों और सड़कों का नाम पिछली सरकारों ने बदल दिया गया था, जिनमें क्वींस रोड, जेल रोड, डेविस रोड, लॉरेंस रोड, एम्प्रेस रोड, कृष्ण नगर, संत नगर, धरमपुरा, बैंडोथ रोड, राम गली, टेम्पबेल स्ट्रीट, लक्ष्मी चौक, जैन मंदिर रोड, कुम्हारपुरा, मोहन लाल बाजार, सुंदर दास रोड, भगवान पुरा, शांति नगर और आउटफॉल रोड शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस पहल के



तहत इस्लामपुरा का नाम कृष्ण नगर, बावरी मस्जिद चौक को जैन मंदिर चौक, मुस्ताफाबाद को धर्मपुरा बनाया गया है। शरीफ ने मिंटो पार्क (ग्रेटर इस्कबाल पार्क) में तीन क्रिकेट मैदानों और एक पारंपरिक 'अखाड़ा' (कुश्ती अखाड़ा) के जर्जोंद्धार

का भी प्रस्ताव रखा है, जिसे व्यापक रूप से नुकसान की भरपाई की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है। उनके भाई प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को 2015 में पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान शहरी विकास कार्यक्रम के तहत तीन

अमेरिका की सैन डिएगो मस्जिद में गोलीबारी, पांच की मौत : इनमें एक गार्ड और दो संदिग्ध



मिली। वाहल ने बताया कि अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे, जो कुछ ही ब्लॉक दूर था, जहां उन्हें एक माली मिला जिस पर गोली चलाई गई थी, लेकिन उसे गोली नहीं लगी थी।

गोलीबारी की जांच जारी : इसके बाद पुलिस ने दो संदिग्धों का पता लगाया, जो एक वाहन में मृत पाए गए। एफबीआई के अनुसार, दोनों किशोर थे। पुलिस प्रमुख ने बताया कि ऐसा लग रहा है कि उनकी मौत खुद को गोली मारने से हुई है। गोलीबारी की घटना से जुड़े हालात और इसके पीछे का मकसद अभी भी जांच के दायरे में है।

एफबीआई स्थानीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों की मदद कर रही है। वाहल ने कहा कि चुंकि तीनों पीड़ित एक स्थानीय मस्जिद में थे, इसलिए जब तक यह साबित नहीं हो जाता कि यह घृणा अपराध नहीं है, हम इसे घृणा अपराध मान रहे हैं। गैर-मुस्लिमों का दौरा चल रहा था मस्जिद के इमाम ताहा हस्साने में बताया कि सोमवार को कुछ गैर-मुस्लिम लोग इस्लाम को समझने के लिए मस्जिद के दौरे पर आए थे। यह

संवाद और मेलजोल बढ़ाने के लिए काम करता है। उन्होंने बताया कि स्कूल के सभी शिक्षक और छात्र सुरक्षित हैं। फिलहाल कोई खतरा नहीं है, लेकिन

लोगों से मस्जिद से दूर रहने को कहा गया है। एहतियात के तौर पर सेंटर को पूरे दिन के लिए बंद कर दिया गया। मस्जिद की वेबसाइट के मुताबिक, यहां सिर्फ मुस्लिम समुदाय के लिए धार्मिक गतिविधियां नहीं होतीं, बल्कि सामाजिक कामों में भी दूसरे समुदायों के साथ मिलकर काम किया जाता है। यहां रोज पांच वक्त की नमाज होती है।

गवर्नर बोले- कैलिफोर्निया मुस्लिम समुदाय के साथ है : कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम ने मुस्लिम समुदाय से कहा कि कैलिफोर्निया आपके साथ खड़ा है। जहां परिवार और बच्चे जुटते हैं, जहां लोग शांति से इबादत करते हैं, वहां ऐसा हमला बेहद भयावह है। कैलिफोर्निया में बताया कि सोमवार को कुछ गैर-मुस्लिम लोग इस्लाम को समझने के लिए मस्जिद के दौरे पर आए थे। यह

सर्विसेज की टीमों मौके पर स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय कर रही हैं।

शूटिंग के बाद खुद को मारा : जानकारी के मुताबिक पुलिस को जैसे ही एक्टिव गेट की खबर मिली, वे 4 मिनट के अंदर घटनास्थल पर पहुंच गए। लेकिन तब तक मस्जिद के बाहर तीन लोगों की मौत हो चुकी थी। वहीं मस्जिद में तबाही मचाने के बाद हमलावर वहां से भाग निकले। रास्ते में उन्होंने एक और शख्स पर गोली चलाई और फिर दोनों शूटरों ने अपनी कार में खुद को गोली मार ली। पुलिस चीफ ने बताया कि पुलिस की तरफ से कोई गोली नहीं चलाई गई थी, यह पूरी तरह आत्मघाती हमला था। शुरुआती जांच में सामने आया है कि 17 वर्षीय शूटर की मां ने हमले से ठीक दो घंटे पहले पुलिस को फोन किया था। मां ने घबराते हुए पुलिस को बताया था कि उनका बेटा 'सुसाइडल' है और घर से हथियार लेकर भागा है। इसके बाद जिस स्कूल में वह पढ़ता था, वहां पुलिस तैनात की गई। हालांकि तब तक शूटर मस्जिद की तरफ निकल चुके थे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी हमले पर प्रतिक्रिया दी है। वॉशिंगटन में मीडिया से बात करते हुए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसे एक डरावनी स्थिति बताया। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'यह एक बेहद भयानक स्थिति है। मुझे इस पर शुरुआती अपडेट्स मिले हैं, लेकिन हम इस पूरे मामले को बहुत गंभीरता से देखने वाले हैं।

मीडिया पर भड़के ट्रंप: ईरान युद्ध कवरेज को लेकर जताई नाराजगी, कहा-पागलपन भरी रिपोर्टिंग से देश को हुआ नुकसान

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर मीडिया आउटलेट्स पर हमला बोला है। उन्होंने ईरान के साथ जारी संघर्ष से जुड़ी रिपोर्टिंग को लेकर मुख्यधारा के मीडिया पर गंभीर आरोप लगाए हैं। ट्रंप ने सीधे तौर पर कहा है कि कुछ अमेरिकी मीडिया संस्थान ईरान युद्ध को लेकर भ्रम की तरह से गलत, पक्षपातपूर्ण और भ्रामक तरीके से खबरें प्रसारित कर रहे हैं। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रथ सोशल पर लिखा कि मान लेते हैं कि ईरान पूरी तरह आत्मसमर्पण कर देता है। वह मान लेता है कि उसकी नौसेना खत्म हो चुकी है और समुद्र की तलहटी में डूब गई है। उसकी वायुसेना का नामोनिशान मिट चुका है। ईरान की पूरी सेना तेहरान से बाहर आ जाती है। वे अपने हथियार डाल देते हैं और हाथ ऊपर उठा लेते हैं। हर एक सैनिक सफेद झंडा लहराते हुए जोर-जोर से चिल्लाता है कि 'मैं संरेड करता हूं।' ईरान का बचा हुआ पूरा नेतृत्व

‘मोजतबा खामेनेई को चोटें आई थीं मगर...’ अब वह पूरी तरह स्वस्थ हैं

तेहरान, एजेंसी। ईरान ने अपने नए सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई के युद्ध में घायल होने की पुष्टि कर दी है। सीनियर ईरानी अधिकारी ने बताया कि युद्ध की शुरुआत में हुए हमलों के दौरान खामेनेई को मामूली चोटें आई थीं। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारी ने कहा कि कोई गंभीर बात नहीं हुई थी और मोजतबा खामेनेई अब सुरक्षित हैं। यह बयान ऐसे समय आया है जब पिछले कई हफ्तों से उनकी सेहत को लेकर तरह-तरह की उटकलें लगाई जा रही थीं। कोई कह रहा था कि मोजतबा खामेनेई का चेहरा जल गया है तो किसी का कहना था कि उन्हें बेहद गंभीर चोटें आई हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, फरवरी के अंत में शुरू हुए ईरान-इजरायल और अमेरिका के



बीच संघर्ष के शुरुआती हमलों में ईरान के कई शीर्ष सैन्य और राजनीतिक ठिकानों को निशाना बनाया गया था। इन्हें हमलों में ईरान के जा रही थीं। कोई कह रहा था कि मोजतबा खामेनेई का चेहरा जल गया है तो किसी का कहना था कि उन्हें बेहद गंभीर चोटें आई हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, फरवरी के अंत में शुरू हुए ईरान-इजरायल और अमेरिका के

हुए थे और उन्हें पैर व चेहरे पर चोटें आई थीं। हालांकि, ईरानी अधिकारियों ने इन दावों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश की गई अफवाह बताया है।

मोजतबा खामेनेई को लेकर तरह-तरह की अटकलें : बीते दिनों सोशल मीडिया और कई विदेशी मीडिया संस्थानों में यह चर्चा भी तेज थी कि मोजतबा खामेनेई सार्वजनिक रूप से सामने क्यों नहीं आ रहे हैं। कुछ रिपोर्टों में यहां तक दावा किया गया कि उनकी हालत बेहद गंभीर है और वह इलाज करा रहे हैं। वहीं, ईरानी अधिकारियों ने लगातार यह कहा कि सुरक्षा कारणों से उनकी सार्वजनिक मौजूदगी सीमित रह गई है। हाल में एक अधिकारी ने बताया कि विस्फोट की वजह से उन्हें हल्की चोट लगी थी,

लेकिन अब वह पूरी तरह स्वस्थ हैं और सरकारी कामकाज पर नजर बनाए हुए हैं।

मध्य पूर्व में जारी तनाव के बीच मोजतबा खामेनेई की स्थिति को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी दिलचस्पी बनी हुई है। युद्ध के बाद से ईरान की सत्ता संरचना और सैन्य रणनीति में बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। विश्लेषकों का मानना है कि मोजतबा खामेनेई की सेहत और उनकी सार्वजनिक मौजूदगी आने वाले समय में ईरान की राजनीति और क्षेत्रीय समीकरणों पर असर डाल सकती है। फिलहाल ईरानी प्रशासन ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि उनके सर्वोच्च नेता सुरक्षित हैं और देश की कमान संभाल रहे हैं।

कैनेया में ईंधन कीमतों के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शन, चार लोगों की मौत; दर्जनों घायल

नैरोबी , एजेंसी। केन्या की राजधानी नैरोबी में रिकॉर्ड ईंधन कीमतों के विरोध में राष्ट्रव्यापी सार्वजनिक परिहहन हड़ताल के दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक झड़पें हुईं। इन झड़पों में कम से कम चार लोगों की मौत हो गई और 30 से अधिक घायल हो गए। आंतरिक मंत्री किपचूबा मुर्कोमेन ने बताया कि चार लोगों की मौत हुई है और 30 से अधिक घायल हुए हैं। हालांकि, उन्होंने मौतों के कारणों का खुलासा नहीं किया। प्रत्यक्षदर्शियों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि नैरोबी में पुलिस ने गोलीबारी की। मंत्री ने यह भी कहा कि 348 लोगों को गिरफ्तार किया गया है और उन्हें हिंसक अवैध विरोध प्रदर्शनों में उनकी संलिप्तता के लिए आरोपित किया जाएगा। प्रदर्शनकारियों ने प्रमुख सड़कों पर टायर जलाए और कम से कम दो

‘इस बार खाड़ी देशों की अपील पर रुके’: ट्रंप ने टाला ईरान पर हमला, कहा- समझौता कठे वरना हमले के लिए तैयार रहे

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान पर होने वाले एक बड़े सैन्य हमले को फिलहाल के लिए टाल दिया है। यह हमला मंगलवार के लिए तय किया गया था, लेकिन आखिरी वक्त में खाड़ी देशों के सहयोगी नेताओं की अपील के बाद इसे रोक दिया गया है।

सोमवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति ट्रंप ने खुद इस बात की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अभी दोनों पक्षों के बीच गंभीर बातचीत चल रही है, इसलिए उन्होंने सैन्य हमले को ईरान पर होने वाले सैन्य हमले को रोक दिया है। इससे पहले उन्होंने ईरान को खुली चेतावनी दी थी कि अगर कोई समझौता नहीं हुआ, तो कमजोर पड़ चुके युद्धविराम के बाद फिर से भीषण लड़ाई शुरू हो जाएगी।

ट्रंप ने अमेरिकी सेना को क्या सख्त निर्देश दिए थे : इस योजनाबद्ध हमले के बारे में ज्यादा जानकारी तो नहीं दी गई, लेकिन राष्ट्रपति ने साफ कहा कि उन्होंने अपनी सेना को पूरी तरह तैयार रहने को कहा है। अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति ट्रंप ने सैन्य अधिकारियों को निर्देश दिया था कि अगर ईरान के साथ कोई स्वीकार करने लायक समझौता नहीं होता है, तो पल भर के नोटिस पर ईरान पर पूरी ताकत के साथ एक बड़ा हमला करने के लिए तैयार रहें। यह बयान दिखाता है कि अमेरिका पूरी तरह से हमले के मूड में था। ईरान पर हमले का प्लान



अचानक क्यों रोक गया? इससे पहले यह किसी को नहीं पता था कि 19 मई (मंगलवार) को ईरान पर हमले की कोई योजना है। सोशल मीडिया पोस्ट में अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति ट्रंप ने बताया कि उन्होंने यह हमला मध्य पूर्व (मिडिल ईस्ट) के अपने सहयोगी देशों की खास गुजारिश पर रोका है। इन सहयोगी देशों में कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बड़े नेता शामिल हैं। इन्हीं देशों के कहने पर फिलहाल हमले का इरादा टाल दिया गया है।

ट्रंप ने सप्ताहांत पर ईरान को क्या खुली चेतावनी दी थी : हमला टालने से ठीक पहले सप्ताहांत (वीकेंड) पर अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान को बहुत ही कड़े शब्दों में चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था कि ईरान को जल्दी से जल्दी कोई कदम उठाना चाहिए, वरना उनका नामोनिशान मिट जाएगा और वहां कुछ भी नहीं बचेगा। वे हफ्तों से धमकी दे रहे हैं कि अप्रैल के मध्य में हुआ युद्धविराम कभी भी खत्म हो सकता है।

केन्या में ईंधन कीमतों के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शन, चार लोगों की मौत; दर्जनों घायल



वाहनों में आग लगा दी। इस कारण कई उपनगरों में यात्रियों को परेशानी हुई और शहर का केंद्र सुनसान रहा। शुक्रवार को केन्या में ईंधन की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गईं। डीजल की कीमतों में 23.5% और गैसोलीन में 8% की वृद्धि हुई। सरकार ने पिछली मूल्य वृद्धि का कारण ईरान युद्ध और ऊर्जा अपूर्ति पर इसके प्रभाव को बताया था, लेकिन उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए करों में कटौती की थी। राष्ट्रपति विलियम रूटो, जो देश से

बाहर हैं, ने नई मूल्य वृद्धि या विरोध प्रदर्शनों पर कोई टिप्पणी नहीं की है। केन्या नेशनल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने कहा कि बढ़ी हुई कीमतों से सभी वस्तुओं और सेवाओं पर असर पड़ेगा। चैंबर ने यह भी नोट किया कि अप्रैल से मई तक केन्या में मूल्य वृद्धि वैश्विक तेल कीमतों में वृद्धि की तुलना में बहुत अधिक थी, जो 'खरेलू लागत बढ़ाई की निरंतर भूमिका' के अनुसार इशारा करती है। भ्रष्टाचार के आरोपों में अक्टूबर 2024 में

महाभियोग के बाद विपक्ष में शामिल हुए पूर्व उप-राष्ट्रपति रिगाथी गैसाया आने के भीमों में तेज वृद्धि के लिए भ्रष्ट व्यापारियों को जिम्मेदार ठहराया, जो अपने लाभ मार्जिन को बढ़ाना चाहते हैं। उन्होंने केन्या की ईंधन कीमतों की तुलना पड़ोसी युगांडा जैसे देशों से की, जहां कीमतें कम हैं और जो आयात के लिए केन्याई बंदरगाहों पर निर्भर हैं।

348 लोगों को किया गया गिरफ्तार : गृह मंत्री किपचुम्बा मुर्कोमेन ने यह भी बताया कि 348 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन पर 'हिंसक और गैर-कानूनी' विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने का आरोप लगाया जाएगा। उन्होंने यह नहीं बताया कि उन चार लोगों की मौत कैसे हुई, लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि नैरोबी में पुलिस ने गोलियां चलाई थीं।

शांति की उम्मीदें खत्म: यूक्रेन पर रूसी ड्रोन-मिसाइलों की चौतरफा मार, ट्रंप की सारी कोशिशें नाकाम

कीव, एजेंसी। रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध अब बेहद खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। रूसी सेना ने यूक्रेन के आठ राज्यों को निशाना बनाकर रातभर भीषण ड्रोन और मिसाइल हमला किया है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की ने सोमवार को बताया कि इस ताजा हवाई हमले में रूस ने 524 विनाशकारी ड्रोन और 22 बैलिस्टिक व क्रूज मिसाइलें दागीं। इस भारी गोलाबारी में 24 से अधिक नागरिक घायल हुए हैं, जिनमें तीन बच्चे भी शामिल हैं। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, मध्य यूक्रेन का निप्रो शहर और उसके आसपास का इलाका इस हमले से सबसे ज्यादा दुःखी है। पिछले दिनों अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दोनों देशों से संघर्षविराम की अपील की थी। ट्रंप ने जेलेंस्की और पुतिन से युद्ध रोकने को कहा था, लेकिन इसका कोई असर नहीं दिखा। अमेरिकी प्रयासों के बावजूद शांति समझौते के कोई संकेत नहीं हैं। पिछले सप्ताह भी रूस ने कीव में एक बहुमंजिला इमारत को मलबे में तब्दील कर दिया था, जहां 24 लोगों की मौत हो गई थी।

यूक्रेन ने रूस के आर्थिक ठिकानों को बनाया निशाना : युद्ध के चार साल से अधिक समय में यूक्रेन ने अपनी लंबी दूरी की मारक क्षमता को काफी मजबूत किया है। यूक्रेन अब रूस के तेल त्रिकानों और अंदरूनी हिस्सों को निशाना बना रहा है। रविवार के यूक्रेन ने रूस पर अब तक का सबसे बड़ा ड्रोन हमला किया। इसमें

माँस्को के पास तीन लोगों सहित कुल चार लोग मारे गए। रूसी रक्षा मंत्रालय का दावा है कि उन्होंने 24 घंटों में 1,000 से अधिक यूक्रेनी ड्रोन मार गिराए या जाम किए, जिनमें से 80 माँस्को की तरफ बढ़ रहे थे।

इसी बीच, यूक्रेन के रक्षा मंत्री मायखाइलो फेंडोरोव ने एक बड़ा एलान किया है। यूक्रेन ने अपना पहला स्वदेशी ग्लाइडबम विकसित कर लिया है। इस बम में 250 किलोग्राम का वॉरहेड लगा है। यह अग्रिम मोर्चे से दर्जनों किलोमीटर पीछे बने बंकरों और कमांड पोस्ट को नष्ट करने में सक्षम है। यूक्रेनी पायलट इस समय युद्ध की वास्तविक स्थितियों में इसका प्रशिक्षण ले रहे हैं।

राष्ट्रपति जेलेंस्की का मानना है कि उनकी लंबी दूरी की मारक क्षमता ने युद्ध की पूरी तस्वीर बदल दी है। दुनिया का नजरिया भी अब बदल रहा है। दूसरी ओर, रूसी रक्षा मंत्रालय ने दावा किया कि उन्होंने यूक्रेन के हथियार कारखानों, ऊर्जा केंद्रों और बंदरगाहों पर सटीक मिसाइल हमले किए हैं और उनके सभी लक्ष्य पूरे हुए हैं। इन लगातार हमलों से यूक्रेन की वायु रक्षा प्रणाली पर भारी दबाव है। इस तनाव के बीच, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस सप्ताह बीजिंग में चीनी नेता शी जिनपिंग से मिलने वाले हैं। लेकिन इन दोनों से ठीक पहले, यूक्रेन की नौसेना ने दावा किया है कि ओडेसा के पास ब्लैक सी में एक रूसी ड्रोन ने चीन के स्वामित्व वाले मालवाहक जहाज को निशाना बनाया है।